चंद वाक़ियाते कर्बला

का तहक़ीक़ी जाइज़ा

PUBLISHED BY
ABDE MUSTAFA OFFICIAL

चंद वाक़ियाते

करबला

का तहक़ीक़ी जाइज़ा

अब्दे मुस्तफ़ा
मुहम्मद साबिर इस्माईली क़ादिरी रज़वी

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

Contents

चंद वाक़ियाते करबला का तहक़ीक़ी जाइज़ा 2
तक़ारीज़ 4
(1) फ़ातिमा सुगरा का झूटा क़िस्सा 5
(2) इमाम हसन को ज़हर किस ने दिया? 8
(3) जन्नती बाप के काँधे पर जहन्नमी बेटा 10
(4) इमाम ज़ैनुल आबिदीन और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की मुलाक़ात का झुटा क़िस्सा 12
(5) मैदान -ए- क़रबला में शादी 15
(6) पानी बंद होने के बारे में इफरात व तफरीत 17
(7) दस मुहर्रम की रात 19
(8) मरजल बहरैन और अल लुलु वल मरजान 21
(9) तारीखुल खुलफा में मौजूद एक रिवायत 22
(10) इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों का झुटा क़िस्सा 24
(11) इमाम हुसैन का घोड़ा ज़ुलजनाह 29
(12) हज़रते सकीना और घोड़ा 32
(13) माहे मुहर्रम में रोना धोना 34
(14) अहले बैत की फ़ज़ीलत में एक झूठी रिवायत 36
(15) मुल्ला हुसैन वाईज़ काशफ़ी सुन्नी नही 37
(16) शहीद इब्ने शहीद, खाके करबला, अवराक़े गम वग़ैरह कुतुब। 39
आखिर में कुछ बातें 40
ज़िम्मन : मुरव्वजा ताज़ियादारी के नाजायेज़ होने पर क़ुतुब-ए-अहले सुन्नत के 100 से ज़ायीद हवाले। 41

चंद वाक़ियाते करबला का तहक़ीक़ी जाइज़ा

इस रिसाले में वाक़िया -ए- करबला से मुतल्लिक़ कुछ गैर मुअतबर वाक़ियात की निशान देही की गयी है। कई महीनों की तलाश व जुस्तज़ू के बाद इसे तैय्यार किया गया है। इसे पढ़ कर आप को अंदाज़ा होगा कि वाक़िया -ए- करबला के हवाले से आज कल किस क़द्र बे जा वाक़ियात को तक़रीरों में बयान किया जाता है। इस रिसाले में जो उनवान आप देखेंगे उन की फेहरिस्त ये है :

(1) फ़ातिमा सुगरा का झूटा क़िस्सा

(2) इमाम हसन को ज़हर किस ने दिया?

(3) जन्नती बाप के काँधे पर जहन्नमी बेटा

(4) इमाम ज़ैनुल आबिदीन और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की मुलाक़ात का झूटा क़िस्सा

(5) मैदाने करबला में शादी

(6) पानी बंद होने के बारे में इफ़रात व तफ़रीत

(7) दस मुहर्रम की रात

(8) मरजल बहरैन और अल लू लू वल मरजान

(9) तारीखुल खुलफ़ा की एक रिवायत

(10) इमाम मुस्लिम बिन अ़कील के बच्चों का झूटा क़िस्सा

(11) इमाम हुसैन का घोड़ा ज़ुल्जनाह

(12) हज़रते सकीना और घोड़ा

(13) माहे मुहर्रम और रोना धोना

(14) मुल्ला हुसैन वाइज़ काशिफ़ी सुन्नी नहीं।

(15) शहीद इब्ने शहीद, खाके करबला, अवराक़े गम वग़ैरह कुतुब

इख्तितामी कलिमात

ज़िम्नन : मुरव्विजा ताज़ियादारी के नाजाइज़ होने पर कुतुबे अहले सुन्नत के सौ से ज़्यादा हवाले

इन उन्वानात के तहत कई बातें आप मुलाहिज़ा फ़रमायेंगे। अगर आप को कहीं कोई गलती नज़र आये तो इस्लाह की निय्यत से हमारी टीम से राब्ता करें।

राब्ते के ज़रिये :

ई मेल : Abdemustafa78692@gmail.com

वॉट्सएप्प :

+919102520764

+917301434813

+919424903221

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

तक़ारीज़

इस रिसाले में इन हस्तियो की तक़ारीज़ मौजूद हैं जिन्हें आप उर्दू रिसाले में पढ़ सकते हैं :

(1) खलीफा-ए-हुज़ूर ताजुश्शरियाह, अल्लामा गुलाम मुस्तफ़ा नईमी

(2) खलीफा-ए- हुज़ूर गुलजार-ए-मिल्लत, अल्लामा मुफ्ती महबूब आलम मिस्बाही

(3) मुफ्ती मुहम्मद मुस्लिहुद्दीन सिद्दिक़ी

(4) मुफ्ती मुहम्मद गुलरेज़ मिस्बाही

(5) मौलाना हाफ़िज़ समीरुद्दीन मिस्बाही

(6) मौलाना हसन नूरी गोंडवी

(7) मौलाना अहमद हुसैन नाज़ा'न साहिब

(8) मौलाना राबेउल क़ादरी साहिब

(9) मौलाना अरशद रज़ा नईमी साहिब

(10) मुहतरम हस्सान राईनी साहिब

(11) जनाबे गज़ल साहिबा

हफिज़हुमुल्लाहू त'आला

(हिन्दी मैं तक़ारीज़ का तर्जुमा शामिल नहीं किया गया है, इसके लिये उर्दू फ़ाईल की तरफ रुजू करें)

अब्दे मुस्तफ़ा

(1) फ़ातिमा सुगरा का झूटा क़िस्सा

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया है:

(क) वाक़िया क्या है?

(ख) इस वाक़िये को लिखने वालों की मेहनत

(ग) इस क़िस्से की हक़ीक़त हज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुस्सलाम क़ादरी के क़लम से

(घ) तहक़ीक़ की कसौटी

(ङ) खुलासा

(क) वाक़िया क्या है?

वाक़िया-ए-करबला के हवाले से जो झूटे वाक़ियात बयान किये जाते हैं उन में हज़रत फ़ातिमा सुगरा का क़िस्सा भी शामिल है। ये कुछ इस तरह है कि जब इमाम हुसैन मदीना से रवाना हुये तो अपनी बेटी को यानी हज़रत फ़ातिमा सुगरा को अकेला छोड़ दिया और मक़्क़ा मुकर्रमा फिर वहाँ से करबला तशरीफ़ ले गये। इधर हज़रत फ़ातिमा सुगरा मदीने में तन्हा और बीमारी में मुब्तिला थीं और अपने बाबा के इंतिज़ार में रोती रहती थीं। फिर इस क़िस्से को दर्दनाक बनाने के लिये कुछ लिखने वालों ने काफ़ी मेहनत की और इस अंदाज़ से लिखा कि पढ़ने और सुनने वाले अपने आँसुओं पर क़ाबू ना रख सकें।

(ख) इस वाक़िये को लिखने वालों की मेहनत :

वैसे तो इस वाक़िये को कई लोगों ने अपनी क़िताबों में नक़्ल किया है लेकिन हम यहाँ सिर्फ़ दो क़िताबों का ज़िक्र करेंगे।

खाक़े क़रबला और शहीद इब्ने शहीद नामी क़िताब में ये वाक़िया जिस ढंग से लिखा गया है, अगर उसे जूँ का तूँ महाफ़िल में बयान कर दिया जाये तो लोग बिना मातम किये नहीं उठेंगे और अगर किसी पेशावर मुक़र्रिर ने थोड़ा सा और नमक मिर्च लगा कर बयान किया तो अंदेशा है कि लोग अपने कपड़े चाक कर लें।

इन क़िताबों में सिर्फ़ एक यही वाक़िया नहीं बल्कि दूसरे वाक़ियात को भी इसी अंदाज़ में लिखा गया है कि जिसे पढ़ कर लोग खूब रोयें। अब आयें देखते हैं कि हज़रत फ़ातिमा सुगरा के इस क़िस्से की हक़ीक़त क्या है?

(ग) इस क़िस्से की हक़ीक़त हज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुस्सलाम क़ादरी के क़लम से :

वाक़िया-ए-करबला पर लिखी जाने वाली मशहूर क़िताब में से एक "शहादत नवासा-ए-सय्यिदुल अबरार" है। साहिबे किताब, हज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुस्सलाम क़ादरी ने इस में एक उन्वान लिखा है "वाक़िया-ए-सय्यिदा फ़ातिमा सुगरा

बिन्ते हुसैन, तहक़ीक़ की कसौटी पर" और इस उन्वान के तहत लिखते हैं कि इमाम हुसैन की दो शहज़ादियों में से एक हज़रत सकीना और दूसरी हज़रत फ़ातिमा सुगरा हैं। दूसरी शहजादी के मुतअ़ल्लिक़ जो क़िस्सा मशहूर किया गया है वो अ़रबी की मुअ़तबर कुतुबे तवारीख़ वग़ैरह में कहीं नहीं है और उर्दू में लिखी गयी मुअ़तबर क़िताबों में भी इस की कोई अस्ल नहीं है।

अगर इस वाक़िये को तहक़ीक़ की कसौटी पर रखा जाये तो बिल्कुल बे-अस्ल है।

हज़रत फ़ातिमा सुगरा की शादी इमाम हसन के बेटे हज़रते हसन मुसन्ना से हो चुकी थी और इमाम हुसैन की रवानगी के वक़्त आप अपने शौहर के घर में मदीना तय्यिबा में मौजूद थीं।

(ملخصًا وملتقطاً: شہادت نواسۂ سید الابرار، ص357)

(घ) तहक़ीक़ की कसौटी :

इस में ये तो सहीह है कि हज़रत फ़ातिमा सुगरा का क़िस्सा जो मशहूर है वो झूट और मनघड़त है लेकिन ये बात तहक़ीक़ की कसौटी पर खरी नहीं उतरती कि हज़रत फ़ातिमा सुगरा अपने शौहर के साथ मदीना तय्यिबा में मौजूद थीं। दुरुस्त तहक़ीक़ ये है कि हज़रत फ़ातिमा सुगरा मैदाने क़रबला में मौजूद थीं चुनान्चे शैखुल हदीस, हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद अ़ली नक्शबंदी रहीमहुल्लाह त'आला लिखते हैं :

हज़रत फ़ातिमा सुगरा मैदाने करबला में मौजूद थीं और सुन्नी व शिया, दोनों की क़िताब से ये साबित है।

शिया मुसन्निफ़ हासिम खुरासानी ने लिखा है कि इमाम हुसैन ने अपनी शहादत के वक़्त वसीयत नामा अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा सुगरा को अ़ता फरमाया।

(منتخب التواریخ، باب وفصل پنجم، ص243، مطبوعہ تہران)

एक और शिया मुहम्मद तक़ी लिसान ने लिखा है कि (जब अहले बैत का क़ाफिला यज़ीद के पास पहुँचा तो) एक शामी उठा और यज़ीद की तरफ मुँह कर के कहने लगा : ऐ अमीरुल मोमिनीन! ये लड़की मुझे इनायत कर दो, वोह फ़ातिमा बिन्ते हुसैन को मांग रहा था।

जब सय्यिदा फ़ातिमा ने ये सुना तो उन पर कपकपी तारी हो गयी और अपनी फ़ूपी सय्यिदा ज़ैनब का दामन थाम लिया।

(ناسخ التواریخ، ج3، ص141، مطبوعہ تہران جدید)

मशहूर शिया मुहम्मद बाक़िर मज्लिसी ने लिखा है कि यज़ीद के सामने हज़रत फ़ातिमा सुगरा ने कहा ऐ यज़ीद! क्या रसूलुल्लाह ﷺ की बेटियाँ क़ैदी बनाई जायेंगी? पस (ये सुन कर) लोग भी रो पड़े और घर वाले भी रो पड़े।

(بحار الانوار، ج11، ص250، مطبوعہ ایران قدیم)

अ़ल्लामा इब्ने कसीर लिखते हैं कि जब मस्तूराते अहले बैत यज़ीद के दरबार में आयीं तो फ़ातिमा बिन्ते हुसैन (जो सकीना से बड़ी थीं) ने कहा ऐ यज़ीद! रसूलुल्लाह ﷺ की बेटियाँ क़ैदी? यज़ीद कहने लगा कि ऐ भतीजी मै भी इसे पसंद नहीं करता हूँ।

(البدایۃ والنھایۃ، ج8، ص196، مطبوعہ بیروت)

अ़ल्लामा इब्ने अ़सीर जज़री लिखते हैं कि फिर इमाम हुसैन के खानदान की औरतें अंदर आयीं और इमाम का सर उनके सामने था तो सय्यिदा फ़ातिमा और सकीना बिन्ते हुसैन आगे बढ़ने लगीं ताकि सर को देख सकें। फ़ातिमा बिन्ते हुसैन जो सकीना से बड़ी थीं, उन्होने कहा की ऐ यज़ीद! रसूलुल्लाह ﷺ की बेटियाँ क़ैदी? यज़ीद कहने लगा कि ऐ भतीजी मै भी इसे नापसंद समझता हूँ फिर एक शामी मर्द खड़ा हुआ और कहने लगा कि ये फ़ातिमा मुझे दे दो।

(کامل ابن اثیر، ج4، ص85، 86، مطبوعہ بیروت)

(ङ) खुलासा :

कुतुब ए अहले सुन्नत व अहले तशय्यो से साबित है कि इमाम हुसैन की बेटी हज़रत फ़ातिमा सुगरा मैदाने क़रबला में मौजूद थीं। ये भी साबित हो गया कि उनकी तरफ मंसूब क़िस्सा बे-अस्ल है। फ़ातिमा सुगरा के क़ासिद और खुतूत वग़ैरह की कोई हक़ीक़त नहीं है।

(2) इमाम हसन को ज़हर किस ने दिया?

वाक़िया-ए-करबला का तअ़ल्लुक़ इमाम हुसैन रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु के साथ है और इमाम हसन रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु आपके भाई हैं और जब वाक़िया-ए-करबला बयान किया जाता है तो इमाम हसन रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु का भी ज़िक्र किया जाता है और यही वजह है कि इस उन्वान को यहाँ शामिल किया गया है।

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया है :

(क) इस सिलसिले में जो मशहूर है

(ख) ज़ा'दा बिन्ते अ़शअ़श की तरफ़ निस्बत करने वाले हज़रात

(ग) इस का रद्द करने वाले हज़रात

(क) इस सिलसिले में जो मशहूर है :

इमाम हसन रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु को ज़हर दे कर शहीद किया गया और मशहूर है कि ज़हर देने वाली आप की बीवी ज़ा'दा बिन्ते अ़शअ़श थी।

बाज़ उलमा ने भी ज़हर खूरानी की निसबत ज़ा'दा बिन्ते अ़शअ़श की तरफ़ की है लेकिन बाज़ उलमा ने इस को ना-क़ाबिले क़बूल और हक़ीक़त के खिलाफ़ बताया है।

सब से पहले हम उन उलमा में से चंद का ज़िक्र करते हैं जिन्होंने ज़हर देने की निसबत ज़ा'दा बिन्ते अ़शअ़श की तरफ़ की है।

(ख) ज़ा'दा बिन्ते अ़शअ़श की तरफ निस्बत करने वाले हज़रात :

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस द्हेल्वी रहीमहुल्लाह

(سر الشھادتین، ص14، 25)

इमाम जलालुद्दीन सुयुती रहीमहुल्लाह

(تاریخ الخلفاء، 192)

इमाम इब्ने हज़र हैतमी रहीमहुल्लाह

(الصواعق المحرقہ، ص141)

अ़ल्लामा हसन रज़ा खान बरेलवी रहीमहुल्लाह

(آئینۂ قیامت، ص21)

और मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिन्द, अ़ल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा खान रहीमहुल्लाह ने इसी को दुरुस्त क़रार दिया है।

(فتاوی مفتی اعظم ہند، ج5، ص306 تا310)

(ग) इस का रद्द करने वाले हज़रात :

अब इन उलमा के अक़्वाल पेश किये जाते हैं जिन का मौक़िफ इस के खिलाफ़ है।

हज़रत अ़ल्लामा सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी इस के मुतअ़ल्लिक़ लिखते हैं कि मुअर्रिखीन ने ज़हर खूरानी की निस्बत ज़ा'दा बिन्ते अ़शअ़श की तरफ़ की है लेकिन लेकीन इस रिवायत की कोई सनद सहीह दस्तयाब नहीं हुई और बगैर दलील किसी मुसलमान पर क़त्ल का इल्जाम किस तरह जाइज़ हो सकता है?

तारीखें बताती हैं कि इमाम हुसैन रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु ने अपने भाई से ज़हर देने वाले के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ्त किया और इससे जाहिर है कि इमाम हुसैन को ज़हर देने वाले का इल्म न था। इमाम हसन ने भी किसी का नाम नहीं लिया तो अब उन की बीवी को क़ातिल मुअ़य्यन करने वाला कौन है!

(دیکھیے: سوانح کربلا، ص101، 102، ملخصًا)

फक़ीहे मिल्लत, हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी,

शैखुल हदीस, हज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी,

हक़ीमुल उम्मत, हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती अहमद यार खान नईमी,

हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद शब्बीर कोटली,

हज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुस्सलाम क़ादरी,

हज़रत अल्लामा मुफ्ती गुलाम हसन क़ादरी और हज़रत अ़ल्लामा क़ारी मुहम्मद अमीनुल क़ादरी रहीमहुमुल्लाह ने यही मौक़िफ इख्तियार किया है।

(دیکھیے: فتاوی فقیہ ملت، ج2، ص406، 407،

خطبات محرم، ص279، 280،

حقانی تقریریں، ص226،

حضرت امیر معاویہ پر ایک نظر، ص69،

شہادت نواسۂ سید الابرار، ص288،

تاریخ کربلا، ص195 تا197،

کربل کی ہے یاد آئی، ص89، 90)

इन तमाम हज़रात के अक़्वाल से ये नतीजा अखज़ होता है कि इमाम हसन की बीवी पर क़त्ल की निस्बत से एहतियात बरता जाये।

(3) जन्नती बाप के काँधे पर जहन्नमी बेटा

वाक़िया-ए-करबला बयान करते हुये जब यज़ीद की बात आती है तो इस वाक़िये को भी बयान किया जाता है लिहाज़ा इसे भी यहाँ शामिल किया गया है।

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया है :

(क) मशहूर वाक़िया

(ख) शारेह बुखारी, अ़ल्लामा शरीफुल हक़ अमजदी रहीमहुल्लाह का जवाब

(ग) बहरुल उलूम, हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती अ़ब्दुल मन्नान आजमी रहीमहुल्लाह का जवाब

(घ) फक़ीहे मिल्लत, हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहीमहुल्लाह का जवाब

(क) मशहूर वाक़िया :

हज़रत अमीर मुआविया रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु के बारे में किसी जाहिल ने ये झुटी रिवायत घढ़ी है कि एक मरतबा आप यज़ीद को अपने काँधे पर बिठाये हुज़ुर ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुये तो आप ﷺ ने फरमाया कि जन्नती बाप के काँधे पर जहन्नमी बेटा सवार है।

(ख) शारेह बुखारी, अ़ल्लामा शरीफ़ुल हक़ अमजदी का जवाब :

इस रिवायत के मुतअ़ल्लिक़ हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि ये रिवायत मन घढ़त और झूट है।

हुज़ूर की हयाते ज़ाहिरी में यज़ीद पैदा ही नहीं हुआ था बल्कि हुज़ूर के विसाल के 15 या 16 या 17 साल के बाद पैदा हुआ।

यज़ीद की पैदाइस 25 हिजरी या 26 हिजरी या 27 हिजरी में हुई है, रिवायत मुख्तलिफ़ हैं। जिस ने ये रिवायत बयान की उस ने हुज़ूर ﷺ पर झूट बाँधने की वजह से अपना ठिकाना जहन्नम में बनाया। बुखारी वग़ैरह तमाम कुतुब में ये हदीस है जो 40-50 सहाबा से मरवी है :

مَن كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

जो मुझ पर झूट बाँधे वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बनाये।

(مشکوٰۃ، ص53)

(فتاوی شارح بخاری، ج2، ص34، ملخصًا)

(ग) बहरुल उलूम, हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती अ़ब्दुल मन्नान आजमी का जवाब :

बहरुल उलूम, हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती अ़ब्दुल मन्नान आजमी रहीमहुल्लाह इस रिवायत के मुतअ़ल्लिक़ लिखते हैं कि बचपन में हम ने जाहिलों की ज़बानी सुना था कि हज़रत अमीर मुआविया रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु यज़ीद को अपने काँधे पर..... अलख।

ये बात इस तरह झूट है कि सब जानते हैं कि हुज़ूर ﷺ ने 10 हिजरी मे पर्दा फ़रमाया और यज़ीद की पैदाईश 26 हिजरी में हुई तो जो शख्स हुज़ूर के पर्दा फ़रमाने के 16 साल बाद पैदा हुआ उस को हुज़ूर ﷺ ने कब हज़रत अमीर मुआविया के काँधे पर देखा और कब उसको जहन्नमी बताया।

(فتاوی بحر العلوم، ج6، ص340)

(घ) फक़ीहे मिल्लत, हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी का जवाब :

फक़ीहे मिल्लत, हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहीमहुल्लाह ने भी इस रिवायत को अपनी दो क़िताबों में बातिल क़रार दिया है।

(انظر: خطبات محرم، ص305۔

وسیرت سیدنا امیر معاویہ، ص17، 18)

ऐसी रिवायत बनाने वालों को मानना पड़ेगा, क्या अ़क़्ल पायी है।

किसी को भी किसी से मिला देते हैं, उन्हें हयात और वफ़ात से कोई मतलब ही नहीं है। वो लोग भी क़ाबिले ज़िक्र हैं जो ऐसी रिवायत को धड़ल्ले से बयान करते हैं।

(4) इमाम ज़ैनुल आबिदीन और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की मुलाक़ात का झुटा क़िस्सा

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया है :

(क) इस वाक़िये की पहले वाले से मुनासिबत

(ख) वाक़िया

(ग) इस की तहक़ीक़

(घ) ऐसे वाक़ियात घढ़ने का मक़्सद, मुल्ला काश़फ़ी और रौज़तुश शुहदा

(क) इस वाक़िये की पहले वाले से मुनासिबत :

ये वाक़िया हम ने मुल्ला हुसैन वाइज़ काश़फ़ी की "रौज़तुश शुहदा" नामी किताब से नक़्ल किया है। इस को पढ़ने के बाद आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि ये भी उस वाक़िये से कम नहीं है जो हम ने हज़रत अमीर मुआविया के हवाले से गुज़िश्ता सफ़हात में नक़्ल किया है।

(ख) वाक़िया :

रौज़तुश शुहदा मुतर्जिम की दूसरी जिल्द में उन्वान "गमे अहले बैत की एक तस्वीर" के तहत ये क़िस्सा दर्ज है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक फ़रमाते हैं कि एक बार मै हरम की हाज़िरी के लिये अकेला ही सहरा से गुज़र रहा था कि अचानक़ मैने 12-13 साल के एक शहजादे को देखा कि वो तन्हा चला जा रहा है। इस शहजादे के गेसू सियाह और चेहरा चाँद की तरह था, मैने कहा : सुब्हान अल्लाह! इस सेहरा मे ये कौन शख्स है।

मैने आगे बढ़ कर सलाम अ़र्ज़ किया तो उन्हों ने जवाब अ़ता फ़रमाया, मैने पूछा : आप कौन हैं?

फ़रमाया : मैं अ़ब्दुल्लाह यानी खुदा का बंदा हूँ।

मैने पूछा : आप कहाँ से आये हैं?

फ़रमाया : मन अल्लाह यानी अल्लाह की तरफ़ से आया हूँ।

मैने कहा : आप को कहाँ जाना है?

फ़रमाया : इलल्लाह यानी खुदा की तरफ़ जाना है।

मैने कहा: आप क्या चाहते हैं?

फ़रमाया : अल्लाह त'आला की खुशनूदी चाहता हूँ।

मैने कहा : आप का जादे राह और सवारी कहाँ हैं?

फ़रमाया : मेरा जादे राह तोशा-ए-तक़वा है और मेरी सवारी मेरे दोनों पाऊँ हैं।

मैने कहा : ये खूँखार बयाबान है और आप छोटी उम्र के हैं, आप क्या करेंगे?

फ़रमाया : तूने किसी ऐसे शख्स को देखा है जो किसी की ज़ियारत की तरफ़ मुतवज्जे हो और वो शख्स उसे बे बेहरा और महरूम कर दे?

मैं ने कहा : अगर आप की उम्र छोटी है मगर बात बहुत बड़ी की है, आप का नाम क्या है?

फ़रमाया : ऐ इब्ने मुबारक़! मुसीबत ज़दगाने रोज़गार का क्या पूछते हो और उन के नाम से क्या तलाश करोगे?

मैने कहा : अगर आप नाम नहीं बताना चाहते तो खुदा के लिये यही बता दें की आप किस क़ौम और किस क़बीले से तअ़ल्लुक़ रखते हैं?

उन्होंने दिल पर दर्द से आहे सर्द खींची और फ़रमाया : हम मज़लूम क़ौम से हैं, हम बे-वतन और गरीबुद-दयार क़ौम से हैं और हम उस क़ौम से हैं जिस पर क़हरो गज़ब तोड़ा गया है।

मैने कहा : मैं कुछ नहीं जान सका, आप अपने बयान मैं इजाफ़ा फ़रमायें।

उन्होंने चंद अशआर पढ़े जिन का मज़्मून ये है :

हम आने वालों को हौज़े क़ौसर से पानी पिलाने वाले हैं और नजात पाने वाला शख़्स हमारे वसीले के बगैर मुराद को नहीं पहुँचेगा।

जो शख़्स हम से दोस्ती रखेगा हरगिज़ बे-बेहरा नहीं रहेगा और जो हमारा हक़ गसब करेगा क़ियामत के दिन हमारे लिये और उस के लिये महकमा-ए-जज़ा की वादा गाह होगी।

उन्हों ने ये बात की और मेरी निगाहों से गायब हो गये। मैने बहुत कोशिश की लेकीन ना जान सका कि वोह कौन थे।

जब मै मक्का पहुँचा तो एक दिन तवाफ़ में लोगों का एक गिरोह देखा जिस ने एक शख़्स को हल्क़े में ले रखा था और बहुत से लोग उस के क़दमों में खड़े थे, मै जब सामने गया तो देखा कि ये वही शहजादे हैं जिन से मेरी मुलाक़ात सेहरा में हुई थी।

लोग उन के इर्द गिर्द जमा हो कर हलाल व हराम के मसाइल पूछ रहे थे और वो फ़सीह ज़बान में सब को जवाब दे रहे थे, मैने कहा : ये कौन हैं?

लोगों ने कहा : अफसोस कि तू इन्हें नहीं जानता! ये अ़ली बिन हुसैन, इमाम ज़ैनुल आबिदीन हैं। ये सुन कर अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने आगे बढ़ कर इमाम के हाथों और पाऊँ को बोसा दिया और रोते हुये कहा : ऐ रसूलुल्लाह के बेटे! आप ने मज़लूम अहले बैत के बारे मैं जो फ़रमाया वो दुरुस्त है।

इस उम्मत में किसी जमाअ़त को वो मुसीबत नहीं पहुँची जो अहले बैत को पहुँची है।

(روضۃ الشھداء اردو، ج2، ص64 تا68)

(ग) इस की तहक़ीक़ :

क़िस्सा आप ने पढ़ लिया, अब जरा देखें कि इसमें क्या मज़ेदार है। इमाम ज़ैनुल आबिदीन की विलादत 38 हिजरी में हुई और विसाल 95 हिजरी में हुआ और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की पैदाइश 118 हिजरी में और इन्तिक़ाल 181 हिजरी में हुआ। अब हिसाब लगाया जाये तो इमाम ज़ैनुल आबिदीन की वफ़ात के 23 साल बाद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की पैदाइश होती है और जब इमाम ज़ैनुल आबिदीन की उम्र 12-13 साल की थी तो उस वक़्त अभी अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की पैदाइश को 68 साल पड़े थे। इस क़िस्से में इमाम ज़ैनुल आबिदीन की मुलाक़ात एक ऐसे शख़्स से ज़बरदस्ती करवाई जा रही है जो 68 साल के बाद पैदा होगा! मज़ेदार है या नहीं?

(انظر: میزان الکتب، علامہ محمد علی نقشبندی، ص221 تا230)

(घ) ऐसे वाक़ियात घढ़ने का मक़सद, मुल्ला काश्फ़ी और रौज़तुश शुहदा :

ये और इस तरह के दीगर वाक़ियात घढ़े गये हैं ताकि लोगों को सुना कर उन्हें रोने धोने पर मजबूर किया जाये और अहले बैत पर हुये मज़ालिम को याद कर के लोग मातम करें।

मुल्ला हुसैन वाइज़ काश्फ़ी कोई सुन्नी नहीं था और उस की ये क़िताब रौज़तुश शुहदा एक गैर मुअतबर क़िताब है जिस में अहले बैत की तरफ़ झूटे क़िस्से कहानियों को मंसूब किया गया है।

(5) मैदान -ए- क़रबला में शादी

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया है :

(क) फिर से रौज़तुश शोहदा अज़ मुल्ला काश्फ़ी

(ख) वाक़िया

(ग) इस वाक़िये की तहक़ीक़

(घ) एक मशहूर वाक़िये की तरफ़ इशारा

(क) फिर से रौज़तुश शोहदा अज़ मुल्ला काश्फ़ी :

ये वाक़िया भी हम मुल्ला हुसैन काश्फ़ी की रौज़तुश शोहदा से नक़्ल कर रहे हैं। ये क़िताब कुछ मुक़र्रीरिन के नज़दीक मोअतबर मानी जाती है हालांके हक़ीक़त इस के बर अक़्स है। इस क़िताब मैं झुटे और मनघड़त वाक़ियात भरे पड़े हैं। वाक़िया ए क़रबला पर उर्दू जबान मैं लिखी जाने वाली कई क़िताबों मैं इस के हवाले देखने को मिलते हैं बल्कि कुछ का तो असल माखज़ ही यही है। एक और वाक़िया इसी क़िताब से ज़ेल में नक़्ल किया जाता है और इस पर बात करना इन तमाम के लिये काफी होगा जीन का माखज़ ये क़िताब है।

(ख) वाक़िया :

मुल्ला हुसैन वायिज़ काश्फी लिखता है कि हज़रते क़ासिम ने इमाम हसन का वसीयत नामा इमाम हुसैन को दिया, इमाम हुसैन देख कर रोने लगे फिर फरमाया कि ए क़ासिम ये तेरे अब्बा जान की वसीयत है और मैं इसे पूरा करना चाहता हूँ।

इमाम हुसैन खेमे के अंदर गये और अपने भाइयों हज़रते अब्बास और हज़रते औन को बुलाकर जनाबे क़ासिम की वालिदा से फरमाया की वोह क़ासिम को नये कपड़े पहनाएं और अपनी बहन हज़रत ज़ैनब को फरमाया की मेरे भाई हसन के कपड़ों का सन्दूक़ लाओ। सन्दूक़ पेश किया गया तो आप ने उसे खोला और उस में से इमाम हसन की ज़िरह निकाली और अपना एक क़ीमती लिबास इमाम क़ासिम को पहनाया और खूबसूरत दस्तार निकाल कर अपने हाथ से उन के सर पर बांधी और अपनी साहिबज़ादी का हाथ पकड़ कर फरमाया ए क़ासिम! ये तेरे बाप की अमानत है जिस ने तेरे लिये वसीयत की है। इमाम हुसैन ने अपनी साहिबज़ादी का निकाह हज़रते क़ासिम से कर दिया।

इस किताब का तर्जमा करने वाले सायिम चिश्ती ने इस रिवायत के बारे में लिखा है कि अगर ये निकाह हुआ था तो इमाम हुसैन ने अपने भाई की वसीयत पर अमल किया होगा वरना इन हालात में निकाह वगैरा का मामला इंतिहायी नामुनासिब और गैर मौज़ूँ हैं।

(روضۃ الشھداء، اردو، ج2، ص297)

(ग) इस वाक़िये की तहक़ीक़ :

इस क़िस्से के बारे में इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाह से सवाल किया गया कि हज़रते क़ासिम की शादी मैदान -ए- करबला में होना जिस बिना पर मेहंदी निकाली जाती है, अहले सुन्नत के नज़दीक साबित है या नहीं?

इमाम -ए- अहले सुन्नत ने फरमाया कि ना ये शादी साबित है ना ये मेहंदी सिवा इख्तिरा इख्तिरायी के कोई चीज़ (यानी ये बनाई हुई बातें हैं।)

(انظر: فتاوی رضویہ، ج24، ص502)

हज़रत अल्लामा मुहम्मद अली नक़्शबंदी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि ये तमाम बातें मनघढ़त हैं और अहले बैत पर बोहतान -ए- अज़ीम है।

इमाम हुसैन की दो साहिबज़ादियाँ थीं और वाक़िया -ए- करबला से पहले दोनों की शादी हो चुकी थी।

(میزان الکتاب، ص246)

(घ) एक मशहूर वाक़िये की तरफ़ इशारा :

इस किताब में ऐसे कई झूटे क़िस्से मौजूद हैं जीन में इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों का वाक़िया भी शामिल है जिस की तहक़ीक़ आप आगे मुलाहिज़ा फरमायें गे। इमाम मुस्लिम के बच्चों का वाक़िया इतना मशहूर है की चंद मोअतबर उलमा ने भी अपनी क़िताब मैं बिला तहक़ीक़ इसे नक़्ल कर दिया है। इस वाक़िये को बाद में लाने की वजह

ये है की पहले रौज़तुश शोहदा नामी क़िताब की हैसियत क़ारईन पर वाज़ेह हो जाए फिर इस वाक़िये की तहक़ीक़ को समझने मैं आसानी होगी।

(6) पानी बंद होने के बारे में इफरात व तफरीत

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया है :

(क) पानी बंद हुआ या नहीं?

(ख) दोनों तरफ़ की रिवायत और मुक़र्रिरीन

(ग) तारीख़ इब्ने कसीर की रिवायत के दसवीं मुहर्रम को खैमे मैं पानी मौजूद था

(घ) अल्लामा शरिफुल हक़ अम्जदी का जवाब

(क) पानी बंद हुआ या नहीं?

अगर ये कहा जाए की मैदाने क़रबला मैं दुश्मनों की तरफ़ से पानी पर किसी क़िस्म की कोई पाबंदी नहीं लगाई गयी थी तो रिवायत की रु से ये सहीह नहीं और अगर ये कहा जाए की तीन दीन तक अहले बैत के खैमों मैं बिल्कुल पानी नहीं था जिस की वजह से बच्चों को भी प्यास की शिद्दत से दो चार होना पड़ा तो ये भी दुरुस्त नहीं है क्यूँ की चंद रिवायत से इसकी नफ़ी होती है।

(ख) दोनों तरफ़ की रिवायत और मुक़र्रिरीन :

मैदान -ए- करबला में अहले बैत पर पानी बंद किया गया या नहीं? इस पर दोनों तरह की रिवायात मौजूद है लेकिन बयान सिर्फ उन्हीं को किया जाता है जिस से लोगों को रुलाया जा सके। कहा जाता है कि तीन दिन तक अहले बैत के खेमें में एक बूँद भी पानी नहीं था और मुसलसल तीन दिन तक बच्चो से ले कर बड़ों तक सब प्यासे रहे और कुछ मुक़र्रिरीन इस से भी आगे बढ़ जाते है और पाँच मुहर्रम से ही पानी बंद कर देते है ताकि वाक़िया मज़ीद दर्दनाक हो जाये।

(ग) तारीख़ इब्ने कसीर की रिवायत के दसवीं मुहर्रम को खैमे मैं पानी मौजूद था :

तारीख इब्ने कसीर में एक रिवायत कुछ यूँ है कि दसवीं मुहर्रम को इमाम हुसैन रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने ग़ुस्ल फ़रमाया और खुशबू लगाई और बाज़ दूसरे साथियो ने भी ग़ुस्ल फरमाया।

(البداية والنهاية، ج8، ص185)

इस रिवायत को मुक़र्रिन हाथ भी नही लगाते क्योंकि अगर इसे बयान कर दिया तो फिर लोगों को रुलाने का धंधा चौपट हो जाएगा, फिर किस मुँह से कहा जायेगा कि तीन दिन तक अहले बैत के खेमो में एक बूँद भी पानी नहीं था।

(घ) अल्लामा शरिफुल हक़ अम्जदी का जवाब :

ख़लीफ़ा -ए- हुज़ूर मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिन्द, शारेह बुखारी, हज़रते अल्लामा मुफ़्ती शरीफुल हक़ अमजदी रहीमहुल्लाह से सवाल किया गया कि क्या इमाम हुसैन ने आशूरा की सुबह ग़ुस्ल फ़रमाया था? क्या ये रिवायत सही है? अगर सही है तो फिर खुद उलमा -ए- अहले सुन्नत जो बयान करते है के तीन दिन तक हज़रते इमाम हुसैन और उन के रूफक़ा पर पानी बंद किया गया, यहां तक कि बच्चे प्यास से बिलकते रहे।

आप रहीमहुल्लाह जवाबन लिखते है कि ये रिवायत तारीख की किताबो में मौजूद है, मसलन बिदाया निहाया में है :

فعدل الحسين الى خيمة قد نصبت فاغتسل فيها وانطلى بانورة... الخ

"उस के बाद इमाम हुसैन खेमे में गये और उस मे जा कर ग़ुस्ल फ़रमाया और हड़ताल इस्तिमाल फरमायी और बहुत ज़्यादा मुश्क जिस्म पर मली, उनके बाद बाज़ रूफक़ा भी खेमे में गये और उन्होने भी ऐसा ही किया।"

(البداية والنهاية، جلد ثامن، ص178)

और इसी में एक सफहा पहले ये भी है :

وخرت مغشيا عليها فقام اليها وصب على وجهها الماء

"हज़रते ज़ैनब बेहोश हो कर गिर पड़ीं, हज़रते इमाम हुसैन उन के क़रीब गये और उन के चेहरे पर पानी छिड़का।"

(ایضاً، ص177)

शारेह बुखारी रहीमहुल्लाह मज़ीद लिखते है की ये दूसरी रिवायत तबरी में भी है हत्ता कि राफ़ज़ियों की भी बाज़ किताबो में (मौजूद) है।

हमारे यहां शियों ने भी एक दफा नुक़्क़न मियाँ को बुलाया था जो मुजतहिद भी थे और बहुत पाये के खतीब भी, उन्होंने ये रिवायत अपनी तक़रीर में बयान की जिस पर जाहिलो ने बहुत शोर मचाया, उन को गालियाँ दीं, एक जाहिल ने तो यहाँ तक कह दिया कि अगर ऐसे दो एक वाइज़ (मुक़र्रिर) आ गए तो हमारा मज़हब.....में मिल जाएगा (खाली जगह में गालिबन कोई गाली होगी)

(फिर दोनो तरह की रिवायत के मुताल्लिक़ लिखते है कि) ये सहीह है के 7 मुहर्रम से इब्ने ज़ियाद के हुक्म से नहरे फुरात पर पहेरा बैठा दिया गया था कि हज़रते इमाम आली मकाम के लोग पानी ना ले पायें मगर ये भी रिवायत है कि इस पहरे के बावजूद हज़रते अब्बास कुछ लोगों को लेकर किसी ना किसी तरह से पानी लाया करते थे लेकिन शहादत के ज़ाकिरीन (हमारे मुक़र्रिरीन) आब बन्दी (यानी पानी बन्द होने) की रिवायत को जिस तरह बयान करते हैं अगर ना बयान करें तो महफिल का रंग नहीं जमेगा।

इस रिवायत में और वक़्ते शहादत हज़रते अली अकबर व हज़रते अली अशगर का प्यास से जो हाल मज़कूर है मुनाफात (तज़ाद) नहीं; हो सकता है कि सुबह को पानी इस मिक़्दार में रहा हो कि सब ने गुस्ल कर लिया फिर पानी खत्म हो गया और जंग शुरू हो जाने की वजह से फुरात के पहरे दारों ने ज़्यादा सख्ती कर दी हो, इस की तायीद इस से भी हो रही है कि हज़रते अब्बास फुरात से मश्क भर कर पानी ला रहे थे कि शहीद हुये।

हमें इस पर इसरार नहीं कि ये रिवायत सहीह है मगर मैं क़तई हुक्म भी नहीं दे सकता कि ये रिवायत गलत है। तारीखी वाक़ियात जज़बात से नहीं जाँचे जाते, हक़ाइक़ और रिवायात की बुनियाद पर जाँचे जाते हैं।

(فتاوی شارح بخاری، ج2، ص69،68)

खुलासा :

पानी बन्द होने वाली सिर्फ एक तरफ की रिवायत को बयान करना और ये कहना कि तीन दिन तक अहले बैत के खेमों में एक बूँद पानी नहीं था, इस से वाज़ेह है कि मक़सद सिर्फ लोगों को रुलाना और महफिल में रंग जमाना है। अपने मतलब की रिवायात में नमक मिर्च लगा कर बयान करना और दूसरी रिवायात को हड़प जाना, ये कहाँ का इन्साफ है? अब रहा ये सवाल कि हमें क्या समझना चाहिये तो इस का जवाब आप पढ़ चुके हैं।

(7) दस मुहर्रम की रात

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया हैं :

(क) ये वाक़िया काफी मशहूर हैं

(ख) वाक़िया

(ग) अल्लामा मुफ्ती शरीफ़ुल हक़ अम्जदी रहिमहुल्लाह का जवाब

(क) ये वाक़िया काफी मशहूर है :

ये वाक़िया भी अवाम में काफी मशहूर है।

कुछ मुक़र्रिरीन इसे बड़े शौक़ से बयान करते हैं और देखा गया है की इस वाक़िये को सुन कर रोना धोना भी खूब होता है।

खुत्बात की एक दो क़ुतुब मैं ये वाक़िया मौजूद है जो की बिला तहक़ीक़ महज़ नक़्ल कर दिया गया है।

(ख) वाक़िया :

दस मुहर्रमुल हराम की रात है....., मैदान -ए- करबला है....., रात का पहला हिस्सा है....., अहले बैत क़ुरआन की तिलावत में मसरूफ हैं....., हज़रते सकीना ने जब सब को क़ुरआन पढ़ते देखा तो मचल गयीं और अपने वालिद इमाम हुसैन के पास जाकर कहने लगीं कि अब्बा जान मुझे भी क़ुरआन शरीफ पढ़ाइये,

चुनाँचे पानी ना होने की वजह से तयम्मुम करवा के "अऊज़ू बिल्लाह" और "बिस्मिल्लाह" पढ़ा और फिर ज़ारो क़तार रोने लगे।

जब वजह पूछी गयी तो इमाम हुसैन ने फरमाया कि क़ुरआन शुरू तो मैने करवा दिया है लेकिन ये सोच कर रो रहा हूँ कि खत्म कौन करवायेगा।

ये वाक़िया शायद हम अच्छी तरह से लिख नहीं पाये लेकिन हमारे मुक़र्रिरीन बहुत अच्छे तरीक़े से इसे बयान करते हैं, खूब रोते हैं और बेचारी आवाम भी अपने आँसुओं को रोक नहीं पाती, और रोके भी कैसे कि वाक़िये में दर्द ही इतना है।

(ग) अल्लामा मुफ्ती शरीफ़ुल हक़ अम्जदी रहिमहुल्लाह का जवाब :

इस दर्दनाक क़िस्से के बारे में हज़रते अल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक अमजदी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि जिस कज़्ज़ाब और जाल साज़ मुक़र्रिर ने इसे बयान किया उस से पूछा जाये कि उस ने कहाँ देखा। आवाम भी ऐसे फकड़ बाज़ और चर्ब ज़ुबान मुक़र्रिर को सर पर बिठाती है, मूँह माँगी फीस देती है, उस के मुक़ाबिल उलमा को घास तक नहीं डालती, आखिर इन जाल साज़ों की इस्लाह कैसे होगी?

इस रिवायत को बयान करने वाला जाल साज़ मुक़र्रिर अगर ज़िन्दा है तो उस से पूछा जाये कि तुम ने ये रिवायत कहाँ देखी है?

(ملتقطاً وملخصاً: فتاوی شارح بخاری، ج2، ص72)

ये रिवायत मनघढ़त और झूटी है और इस को बयान करने वाला मुक़र्रिर ....., बहुत हो गया, अब हम क्या कहें।

(8) मरजल बहरैन और अल लुलु वल मरजान

वाकिया -ए- कर्बला और अहले बैत की फ़ज़ीलत बयान करते हुए ये भी बयान किया जाता है कि क़ुरआन -ए- मजीद में मज़कूर मरजल बहरैन और अल लुलु वल मरजान से मुराद अहले बैत है हालाँकि ये तफ़्सीर अहले सुन्नत के नज़दीक़ दुरुस्त नहीं।

इस पर मुख़्तसर सी तहरीर यहां शामिल की जाती है मुलाहिज़ा फरमाए :

कुछ नया होना चाहिए, इस चक्कर मे बाज़ मुक़र्रिरीन जो पाते है बयान कर देते हैं, ये भी नही देखते की जो हम बयान कर रहे हैं वो किस हद्द तक दुरुस्त है।

बाज़ लोग क़ुरआन -ए- पाक की सूरह -ए- रहमान म वारिद हुए लफ्ज़ "मरजल बहरैन" से हज़रत अली और हज़रते फ़ातिमा मुराद लेते हैं और "अल लुलु वल मरजान" से हसनैन करीमैन को मुराद लेते है हालांकि ये सहीह नहीं हैं।

शैखुल हदीस, हज़रते अल्लामा गुलाम रसूल क़ासमी लिखते हैं :

अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहीमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि ये जाहिलाना तावील है जो शियों ने की है।

(الاتقان فی علوم القرآن، ج2، ص180)

मुल्ला अली क़ारी रहीमहुल्लाह ने लिखा है कि "मरजल बहरैन" और "अल लूलू वल मरजान" की ये तावील शिया जैसे जाहिल और अहमक़ लोगों का काम है।

(مرقاۃ، ج1، ص292)

अल्लामा इब्ने तैमिया (जो के सुन्नी नहीं) ने लिखा है कि ये तफसीर शियों ने घढ़ी है।

(مقدمہ تفسیر ابن تیمیہ، ص29)

(انظر: سانحۂ کربلا، ص16)

अल्लामा गुलाम रसूल क़ासमी एक दूसरे मक़ाम पर लिखते हैं:

इस तावील के बारे में उलमा ने साफ लिखा है कि ये जाहिलों और अहमक़ों की तावील है जैसे रवाफिज़।

(الاتقان للسیوطی، مرقاۃ للقاری، مجمع البحار، فیض القدیر)

(انظر: اصلاح امت، ص 11)

ये तावील कुछ किताबों में भी देखने को मिलती है।

शहीद इब्ने शहीद नामी किताब में इस का मिलना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन चंद मोतबर उलमा ने भी इसे फज़ाइल -ए- अहले बैत के ज़िमन में नक़ल कर दिया है जो एक खता है।

यक़ीनन उन से ऐसा अदम -ए- तवज्जोह की वजह से हुआ है लेकिन अब जब मालूम हो जाये तो फिर इसे बयान करना जहालत के सिवा कुछ नहीं है।

(9) तारीखुल खुलफा में मौजूद एक रिवायत

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया है :

(क) मोअतबर क़ुतुब में झूटी रिवायात का इमकान

(ख) तारिखुल खुलफ़ा में एक रिवायत

(ग) अल्लामा मुफ्ती शरीफ़ुल हक़ अम्जदी का जवाब

(घ) ये जान लें

(क) मोअतबर क़ुतुब मैं झूटी रिवायात का इमकान :

ऐसा नहीं है की सिर्फ़ गैर मोअतबर क़ुतुब मैं ही झूटी रिवायात होती हैं या जीन क़ुतुब मैं झूटी रिवायात हो वो गैर मोअतबर होती हैं बल्कि मोअतबर क़ुतुब मैं भी झूटी रिवायात का इमकान होता है और इससे क़िताब के मोअतबर होने पर हर्फ नहीं आता।

इमाम सुयूती रहिमहुल्लाहू त'आला की क़िताब तारिखुल खुलफ़ा बड़ी मशहूर क़िताब है और इस से हम ऐक ऐसी रिवायत नक़्ल कर रहे हैं जिसे कोई भी अहले बैत से मुहब्बत रखने वाला शख्स क़बूल नहीं कर सकता और इससे ये बताना मक़्सूद है की मोअतबर क़ुतुब मैं भी झूटी रिवायात हो सकती हैं।

(ख) तारिखुल खुलफ़ा मैं एक रिवायत :

अक्सर देखा गया है की जब किसी वाक़िये को दलाईल के साथ झूटा कहा जाता है तो बाज पढ़े लिखे लोग भी इस बात की रट्ट लगाना शुरु कर देते हैं की देखैं फुलाँ ने लिखा है लिहाज़ा झूट नहीं हो सकता।

ऐसे लोग या तो मुसन्नीफ़ को मासूम क़रार देना चाहते हैं या उस क़िताब को क़ुरान का दर्जा देना चाहते हैं की खता की गुंजाईश ही नहीं है।

अगर ऐसा नहीं चाहते तो फिर ये ला इल्मी है की किसी क़िताब में मौजूद हर बात को सहीह मान लेते हैं और जब दलाईल के साथ उस की हक़ीक़त बताई जाये तो क़बूल नहीं करते।

जो ऐसा कहते हैं की फुलाँ फुलाँ वाक़िया फुलाँ फुलाँ मुअतबर कुतुब में मौजूद है लिहाज़ा ये झूटा नहीं हो सकता तो चलें थोड़ी देर के लिये मान लेते हैं कि मुअतबर कुतुब में झूटी रिवायात नहीं हो सकती लेकिन अब आप इस रिवायत का क्या जवाब देंगे जो इमाम सुयूती रहीमहुल्लाह की किताब "तारीखुल खुलफा" में मौजूद है :

فلما رهقه السلاح عرض عليهم الاستسلام والرجوع والمضى الى يزيد فيضع يده فى يده فابوا الاقتله فقتل

"जब इमाम हुसैन को हथियारों ने घेर लिया तो इमाम ने उन पर सुलह पेश की और लौटने की ख्वाहिश की और यज़ीद के पास जाने की ताकि अपना हाथ उस के हाथ पर दे दें।"

(تاریخ الخلفاء، ص207)

(ग) अल्लामा मुफ्ती शरीफ़ूल हक़ अम्जदी का जवाब :

इस रिवायत के मुतल्लिक़ हज़रते अल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी रहीमहुल्लाह फरमाते हैं कि ये रिवायत जाल और किज़्ब है और ये बात दुश्मनों की उड़ायी हुई है।

(فتاوی شارح بخاری، ج2، ص70)

(घ) ये जान लें :

जान लीजिये कि क़ुरआन -ए- मजीद के इलावा कोई ऐसी किताब नहीं जिस में गलतियों का इमकान ना हो।

किताबें लिखने वाले इन्सान ही थे लिहाज़ा उन से भी गलतियाँ हो सकती हैं, ये कोई ज़रूरी नहीं कि किसी मुअतबर किताब में मौजूद एक एक लफ्ज़ मुअतबर और मुस्तनद हो।

अगर ऐसा है तो फिर सिहाह सित्ता के बारे में क्या ख्याल है, ये तो मुअतबर किताबें हैं लेकिन इन में भी मौज़ू रिवायात मौजूद हैं।

(10) इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों का झुटा क़िस्सा

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया है :

(क) इस में कुछ खास है

(ख) असल माखज़ क्या है?

(ग) तीन क़िस्म की क़िताबें

(घ) इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चे तारीख़ के आईने में

(ङ) एक बार फिर से बहस

(च) खुलासा

(क) इस में कुछ खास है :

ये वाक़िया दूसरों से खास है लिहाज़ा इस पर तफ्सीली गुफ्तगू की जाए गी। खास होने की पहली वजह ये है की उर्दू जबान में वाक़िया ए क़रबला पर जितनी क़िताबें लिखी गयी हैं तक़रीबन सब में ये वाक़िया नक़्ल किया गया है यहाँ तक की कुछ मोअतबर उलमा ने भी इसे नक़्ल कर दिया है।

क़िताबों में होने के साथ साथ इसे कसरत से तक़रीरों में बयान भी किया जाता है लिहाज़ा बेश्तर लोग इस वाक़िये से वाक़िफ़ हैं। गुज़िश्ता उन्वानात के तहत हम ने ऐसी कई बातें बयान की हैं जिन को सामने रख कर आप इस वाक़िये की हक़ीक़त को समझ सकेंगे। इस वाक़िये पर आगाज़ मैं गुफ्तगू ना करने का यही मक़्सद था की पहले कुछ इशारे दे दिये जाएँ फिर असल की तरफ़ चला जाए।

(ख) असल माखज़ क्या है?

वाक़िया ए क़रबला मैं जो क़िस्से कहानियाँ दाखिल हो गईं या जीन मनघड़त वाक़ियात को वाक़िया ए क़रबला के साथ जोड़ा गया उन में से इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों का वाक़िया बहुत मशहूर है। इस वाक़िये को इतनी शोहरत हासिल हुयी के उर्दू जबान मैं वाक़िया ए क़रबला पर लिखी जाने वाली तक़रीबन हर क़िताब मैं ये मौजूद है, यहाँ तक की बाज़ मोअतबर मुसन्नीफीन ने भी अपनी क़िताबों मैं इसे नक़्ल किया है।

जिन क़िताबों मैं ये वाक़िया लिखा गया है, उन की तादाद सो के क़रीब है। ये तमाम क़िताबें वाक़िया ए क़रबला के पैश आने के सैक्डों बल्कि हज़ारों साल बाद लिखी गई हैं तो ज़ाहिर सी बात है की लिखने वालों ने कहीं से अख़्ज़

किया होगा और वोह माखज़ ही हमें हक़ीक़त बता सकते है लिहाज़ा अब हमें ये देखना होगा की इस का असल माख्ज क्या है।

(ग) तीन क़िस्म की क़िताब :

वोह तमाम क़िताबें जिन मैं ये वाक़िया दर्ज है, उन्हें हम तीन हिस्सों में बांट सकते हैं। पहली तो वो किताबें हैं जिन में किसी क़िताब का हवाला नहीं है, बस वाक़िया मौजूद है, दूसरी वो हैं जिन मैं माज़ी क़रीब में लिखी जाने वाली किसी क़िताब का हवाला दिया गया है,

और तीसरी वो हैं जीन में एक ऐसे माखज़ का ज़िक्र किया गया है जो इस वाक़िये का असल मरकज़ है।

पहली दो क़िस्मों को अलग करते हैं क्यूँ की वो असल माखज़ तक मआविन नहीं बन सकतीं। अब जो तीसरी क़िस्म की क़िताबें हैं उन मैं जिस माखज़ का ज़िक्र है वो "रौज़ातूश शोहदा" नामी क़िताब है। ये क़िताब फारसी जबान मैं है और मुसन्नीफ का नाम मुल्ला हुसैन बिन अली काश्फ़ी है जिस का इन्तेक़ाल 910ही. में हुआ। यही वो सब से पहला शख्स है जिस ने इस मनघड़त क़िस्से को बयान किया है वरना कुतुबे तारीख़ मैं इस का कोई नाम व निशान नहीं था। एक शिया मिर्जा तक़ी लिसान ने भी इस बात का ऐतराफ किया है की सब से पहले इमाम मुस्लिम के बच्चों की शहादत का वाक़िया "रौज़ातूश शोहदा" में बयान किया गया है और पहले मोअर्खीन मैं सिर्फ़ आसिम कुफी ने बच्चों का तज़कीरा किया है वो भी नाम लिये बगैर और शहादत का कोई ज़िक्र नहीं किया। मिर्जा तक़ी ने एक क़िताब के हवाले से ये तक लिखा है की इमाम हुसैन की शहादत के बाद जब अहले बैत को क़ैदी बना कर लाया गया तो इमाम मुस्लिम के छोटे साहबजादे उन के साथ क़ैदी थे। इस वाक़िये के सिलसिले मैं "रौज़ातूश शोहदा" पहली क़िताब है। इस क़िताब और साहिबे क़िताब पर हम तफ़सील से क़लाम करें गे लेकिन इस से पहले तारीख़ की रोशनी मैं इस वाक़िये की हक़ीक़त को मुलाहिज़ा फरमायें जिसे मुहक़्क़ीक़े अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा मुहम्मद अली नक़्शबंदी रहिमहुल्लाह ने बयान किया है।

(घ) इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चे तारीख़ के आईने मैं :

अल्लामा इब्ने असीर जज़री लिखते हैं की इमाम मुस्लिम बिन अक़ील (जब कुफ़ा की तरफ़ रवाना हुए तो पहले) मदीने में रसूलुल्लाह ﷺ की मस्जिद में गए और नमाज़ अदा करने के बाद दो रास्ता बताने वालों को उजरत पर ले कर उन के साथ (जानिबे कुफ़ा) चल पड़े। रास्तें मैं सब को बहुत ज्यादा प्यास लगी जिस की वजह से वो दोनों मर गये और मरते वक़्त इमाम मुस्लिम को पानी का रास्ता बता गये।

(الکامل فی التاریخ، ج4، ص21، مطبوعہ بیروت)

ये ऐसी किताब का हवाला है जिसे शिया व सुन्नी दोनों मुअतबर जानते है। इस मे इमाम मुस्लिम के बच्चो का कहीं कोई ज़िक्र नही है, इमाम मुस्लिम का मदीना जाना, रास्ते मे प्यास लगना, दोनों रास्ता बताने वालों की मौत हो जाना, इस पूरे वाक़िये में इमाम मुस्लिम का बच्चो को साथ ले जाना मज़कूर नही है।

अगर बच्चे साथ थे तो कहीं तो ज़िक्र होना चाहिये था? खुसूसन प्यास के वक़्त उन की हालत का ज़िक्र होना चाहिये था।

अल्लामा इब्ने खलदून, अल्लामा इब्ने कसीर और तबरी ने भी इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों का ज़िक्र नहीं किया हालाँकि मदीना जाने, रास्ता बताने वालों को साथ लेने और प्यास की शिद्दत से इन्तिक़ाल कर जाने का तज़्किरा किया है।

(تاریخ ابن کثیر، ج8، ص198۔ تاریخ ابن خلدون، ج2، ص512۔ تاریخ طبری، ج4، ص147)

कुतुब -ए- तारीख में इमाम मुस्लिम का अपने बच्चों को साथ ले जाना ही साबित नहीं है।

इस के इलावा शियों की मुअतबर कुतुब में भी इस का सुबूत नहीं है।

शियों की सब से बड़ी और ज़खीम किताब "बिहारुल अनवार" जो 110 जिल्दों पर मुश्तमिल है, उस में भी इमाम मुस्लिम बिन अक़ील और रास्ता बताने वालों का तो ज़िक्र है लेकिन बच्चों का कोई तज़्किरा नहीं है।

(بحار الانوار، ج44، ص335، مطبوعہ تہران)

तारीख की दीगर किताबों में भी इमाम मुस्लिम के बच्चों का कोई ज़िक्र नहीं है। जिस से साफ ज़ाहिर होता है कि ये क़िस्सा जो हमारे दरमियान मशहूर है ये महज़ एक अफसाना है जिसे रोने रुलाने के लिये घढ़ा गया है।

जो दलाईल पेश किये गये वो इस वाक़िये की तरदीद के लिये काफी है और इन के इलावा इमाम मुस्लिम की वसीयत भी क़ाबिल -ए- गौर है जिस का ज़िक्र सुन्नी वा शिया दोनो तरफ की कुतुब में मौजूद है, चुनाँचे इमाम मुस्लिम ने शहीद होने से पहले चंद वसीयतें फरमायी और वो ये तीन हैं :

(1) इस शहर (कूफा) में जो मेरा क़र्ज़ है उसे अदा कर दिया जाये।

(2) शहादत के बाद मेरे जिस्म को ज़मीन में दफ्न कर दिया जाये।

(3) किसी को भेज कर इमाम हुसैन को वापस जाने का पैगाम दे दिया जाये।

(البدایۃ والنھایۃ، ج8، ص56، مطبوعہ بیروت۔

کتاب الفتوح تصنیف احمد بن عاصم الکوفی، ص99، مطبوعہ حیدرآباد دکن۔

الکامل فی التاریخ، ج4، ص34، مطبوعہ بیروت۔

مقتل حسین مصنفہ ابوالمؤید خوارزمی، ص212، مطبوعہ ایران۔

تاریخ طبری، ج6، ص212، مطبوعہ بیروت۔

ناسخ التواریخ، ج2، ص98، مطبوعہ تہران جدید)

यहाँ गौर करने की बात ये है कि जब इमाम मुस्लिम अपने क़र्ज़ और अपने जिस्म के लिये वसीयत कर रहे हैं तो फिर अपने बच्चों को कैसे भूल गये?

इमाम मुस्लिम बिन अक़ील की वसीयत में ये बात ज़रूर मौजूद होनी चाहिये थी कि मेरे बच्चों को फुलाँ जगह पहुँचा दिया जाये लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है, बेशक इमाम मुस्लिम अपने बच्चों से मुहब्बत करते थे तो ऐसा कैसे हो सकता है कि आप उन्हें भूल जायें?

मज़्कूरा तमाम बातों से ये साबित होता है कि इमाम मुस्लिम का अपने बच्चों को कूफा ले जाना, उन बच्चों का यहाँ से वहाँ भटकना और शहीद कर दिया जाना सब क़िस्से कहानियाँ बे असल वा मनघढ़त हैं।

इस क़िस्से को सबसे पहले मुल्ला हुसैन वायिज़ कश्फी ने रौज़तुश शुहदा में लिखा है और आप को शायद ये बात कड़वी लगे लेकिन सच ये है कि मुल्ला हुसैन कश्फी सुन्नी नहीं बल्कि अहले तशय्यु था, ये और इस की किताब अहले सुन्नत के नज़दीक कोई हुज्जत नहीं।

(ङ) एक बार फिर से बहस :

सुन्नी व शिया की मुअतबर तारीख़ की कुतुब से ये साबित होता है की इमाम मुस्लिम बिन अक़ील अपने बच्चों को साथ ले कर नहीं गये थे और फिर बच्चों की शहादत का जो तवील क़िस्सा क़िताबों मैं मौजूद है वो सहीह नहीं है। इस तहक़ीक़ पर मुमकिन बल्कि गालिब गुमान है की लोग ऐतराज़ करें गे और ये कहें गे की एक अर्शे से हम इस वाक़िये को सुनते और पढ़ते आ रहे हैं। ये बात बिल्कुल सहीह है की एक अर्से से ऐसे वाक़ियात बयान किये जा रहे हैं लेकीन इस

का ये मतलब तो नहीं है की इन वाक़ियात को सिर्फ़ इसी वजह से क़बूल कर लिया जाये जब की तहक़ीक़ इस के खिलाफ है।

इसे आसान लफ्जों मैं एक बार फिर से समझते लें की सुन्नी व शिया, दोनों तरफ़ की क़ुतुब त्वारीख मैं इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों के इस क़िस्से का कहीं कोई तज़क़ीरा नहीं है। दूसरी बात जो क़ाबिले गौर है वोह ये की दोनों तरफ़ की क़िताबों मैं ये लिखा है की इमाम मुस्लिम जब कुफ़ा की जानिब रवाना हुये तो रास्ते मैं प्यास की शिद्दत से आप के दो साथियों की मौत हो गई जो आप को रास्ता बताने वाले थे। अलकामिल, अलबिदाया, तबरी, खुल्दोन, बहारुल अनवार वगैरा मैं इमाम मुस्लिम की हालात दर्ज हैं लेकीन बच्चों का नाम तक नहीं है। जब प्यास की शिद्दत से दो साथियों की मौत हो गई तो बच्चों का क्या हुआ, इस का कोई तज़कीरा नहीं मिलता जिस से मालूम होता है की इमाम मुस्लिम का अपने बच्चों को कुफ़ा ले जाना ही साबित नहीं है।

इस क़िस्से को सब से पहले बयान करने वाला मुल्ला हुसैन काश्फी एक ऐसा गैर मुअतबर शख्स है जिस ने कई मनघढ़त वाक़ियात को अपनी किताबों में नक़ल किया है। इस की किताब रौज़तुश शुहदा में सिर्फ यही नहीं बल्कि कई झूटे क़िस्से मौजूद हैं। इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों के क़िस्से को सिर्फ रौज़तुश शुहदा में होने की वजह से किसी तरह क़ुबूल नहीं किया जा सकता क्योंकि कुतुब -ए- तवारीख में इस का नामो निशान तक नहीं है बल्कि उल्टा इस की नफ़ी मौजूद है।

अब रहा ये सवाल कि जिन मुअतबर उलमा ने इसे अपनी किताबों में नक़ल किया है उन का क्या? इसे आसानी से यूँ समझें कि एक शख्स ने कोई बात कही फिर किसी दूसरे शख्स ने उस बात को आगे बयान किया फिर उस पर भरोसा कर के तीसरे शख्स ने भी आगे बढ़ा दिया फिर चौथे, पाँचवे..... इस तरह सैकड़ों लोगों ने उसे एक दूसरे पर एतिमाद कर के बयान कर दिया और वो बात काफी मशहूर हो गयी लेकिन यहाँ गौर करें कि अगर पहले शख्स की बात गलत थी तो क्या अब उन सैकड़ों लोगों के बयान करने की वजह से क़ुबूल कर की जायेगी? हरगिज़ नहीं क्योंकि उन सैकड़ों के सहीह या गलत होने का दारोमदार उस पहले शख्स पर है लिहाज़ा अगर पहला सहीह है तो सैकड़ों लोग भी सहीह क़रार दिये जायेंगे और अगर पहला गलत है तो वो बात गलत ही रहेगी। इसी तरह इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों के क़िस्से को सबसे पहले लिखने वाला शख्स ही झूटा है तो फिर बात खत्म हो जाती है।

शियों मैं से बाज़ ने भी ये बात तस्लीम की है की क़ुतुबे त्वारीख मैं इस क़िस्से का कोई ज़िक्र नहीं मिलता और अगर चंद क़िताबों मैं है भी तो ये है की इमाम हुसैन की शहादत के बाद इमाम मुस्लिम के छोटे बेटे क़ैद मैं थे। शियों ने ये भी लिखा है की सब से पहले इसे बयान करने वाला मुल्ला हुसैन काश्फ़ी है और झूटे क़िस्से कहानियों को बयान करना इस का मनपसंद तरीक़ा है।

इस क़िस्से को सहीह कहने का मतलब है कई झुटे क़िस्सों को क़बूल करने का दरवाज़ा खोलना क्यूँ की रौज़तुश शोहदा मैं और भी कई अफ्साने मौजूद हैं जीन मैं से चंद हम गुज़िश्ता उन्वानात के तहत नक़्ल कर चुके हैं।

(च) खुलासा :

इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों का वाक़िया क़ुतुबे त्वारीख मैं मौजूद नहीं है।

क़ुतुबे त्वारीख मैं जो कुछ मौजूद है वो इस वाक़िये की नफ़ी करता है।

इस वाक़िये को घड़ने वाला मुल्ला हुसैन वायीज़ काश्फ़ी है।

शियाओं ने भी ऐतराफ किया है की ये वाक़िया मुल्ला हुसैन काश्फ़ी ने सब से पहले लिखा है।

मुल्ला हुसैन काश्फ़ी ने कई झूटे वाक़ियात बयान किये हैं।

इस की क़िताब रौज़तूश शोहदा मैं मौजूद वाक़ियात का ऐतबार नहीं किया जा सकता।

चंद क़ुतुब मैं इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के साहबजादे का क़ैद मैं होने का ज़िक्र मिलता है जिस से इस वाक़िये की मजीद नफ़ी हो जाती है।

मुताखरीन ने बिला तहक़ीक़ नक़्ल कर दिया और उस की वजह एक दुसरे पर एतमाद और साथ मैं वाक़िये की शोहरत थी लिहाज़ा उन पर इलजाम नहीं लेकीन अब उसे सहीह क़रार देना दुरुस्त नहीं है। मुल्ला हुसैन काश्फ़ी और उस की क़िताब रौज़तूश शुहदा के मुताल्लिक़ मजीद कुछ बातें आगे बयान की जाएगी।

(11) इमाम हुसैन का घोड़ा जुलजनाह

इस उन्वान के तहत इन बातो को ज़ेरे बहस लाया गया है :

(क) एक बार फिर रौज़तूश शुहदा

(ख) वाक़िया

(ग) ये फर्ज़ी और मनघड़त है

(घ) मैदाने क़रबला में घोड़ा

(क) एक बार फिर रौज़तूश शुहदा :

जो कुछ अभी तक लिखा गया उससे ये बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती हैं की रौज़तूश शुहदा का एक गैर मुअतबर क़िताब है जिस मैं झूटे क़िस्से कहानियों की भरमार है।

इस का मुसन्नीफ मुल्ला हुसैन काश्फ़ी ऐसे वाक़ियात घड़ने मैं माहिर है जिनसे मातम को फरोग दिया जा सके।

मौसूफ अगर चाहें तो इमाम ज़ैनूल आबिदीन की मुलाक़ात हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुबारक से करवा देते हैं, मैदान-ए-क़रबला मैं शादी करवा देते हैं, इमाम मुस्लिम के बच्चों पर ऐसा अफ्साना लिख देते हैं की इस की असल कहीं नहीं मिलती, इन्हीं वाक़ियात मैं से एक इमाम हुसैन के घोड़े ज़ुलजनाह का वाक़िया है।

(ख) वाक़िया :

मुल्ला हुसैन काश्फी लिखता है कि इमाम हुसैन की शहादत के बाद आप का घोड़ा ज़ुलजनाह बेक़रार हो कर चारों तरफ भागने लगा फिर कुछ देर बाद वापस आ कर उस ने अपनी पेशानी के बाल खून से तर किये और अपनी आँखों से आँसू बहाता हुआ खेमे की तरफ लौट आया।

जब अहले बैत ने देखा तो उन्होने फरियाद करते हुये घोड़े से फरमाया कि ए ज़ुलजनाह तू ने इमाम के साथ ये क्या किया?

तू उन्हें साथ ले कर गया था वापस क्यूँ नहीं लाया ? आखिर तू किस दिल के साथ उन्हें दुश्मनों के बीच छोड़ आया है?

अहले बैत नोहा कर रहे थे और ज़ुलजनाह गर्दन झुकाये रो रहा था और अपने चेहरे को इमाम ज़ैनुल आबिदीन के पाऊँ पर मल रहा था फिर उस घोड़े ने ज़मीन पर सर मारा और किसी शख्स को उस का निशान ना मिल सका।

(روضۃ الشھداء، ج2، ص361)

(ग) ये फ़र्ज़ी और मनघड़त है :

ये फ़र्ज़ी और मनघढ़त क़िस्सा मुल्ला हुसैन काश्फी ने शियों की किताब से नक़ल किया है। किसी मुअतबर किताब में इस का कोई तज़्किरा नहीं है।

ऐसे वाक़ियात घढ़ने का सिर्फ एक मक़सद है और वो है नोहा ख्वानी को फरोग देना।

पहली बात तो ये है कि इमाम हुसैन ने करबला तक ऊँटनी पर सफर किया तो ये घोड़ा कहाँ से आ गया?

(घ) मैदाने क़रबला मैं घोड़ा

इमाम सुयूती और शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस दहेलवी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि हज़रते अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने एक मक़ाम पर फरमाया कि ये वो जगह है जहाँ उन (शहीदाने करबला) के ऊँट बैठेंगे और उन के कुजावो की जगह ये है और इस जगह उन का खून गिराया जायेगा।

(ملخصًا: خصائص کبری، سر الشھادتین، دلائل النبوۃ)

हज़रते अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने एक जगह की निशानदेही करते हुये फरमाया कि यहाँ उन के ऊँट बैठेंगे जिस से साबित होता है कि करबला में इमाम हुसैन के पास घोड़े नहीं थे।

कुछ शियों ने लिखा है कि जब इमाम हुसैन रवाना होने लगे तो आप के भाई मुहम्मद बिन हनफिया ने आप को रोकने के लिये आप की ऊँटनी की नकील पकड़ ली। (यानी आप ऊँटनी पर सवार थे।)

(ذبح عظیم، ص165 بہ حوالہ مقتل ابی مخنف)

तारीख ए तबरी में है कि रास्ते में इमाम हुसैन ने फ़र्ज़दक़ शायिर से बातें की और फिर अपनी सवारी (ऊँटनी) को हरकत दी।

(تاریخ طبری، ج6، ص218)

कुछ किताबों में इमाम हुसैन का ये क़ौल मौजूद है कि आप ने फरमाया :

ये करबला मसाइब की जगह है, ये हमारे ऊँटनियों के बिठाने की जगह है, ये हमारे कुजावे रखने की जगह है और ये हमारे मर्दों की शहादत गाह है।

(کشف الغمہ، ج2، ص347۔ مناقب ابن شہر آشوب، ج4، ص97۔ الاخبار الطوال، ص353)

एक शिया लिखता है कि इमाम हुसैन ने खिताब फरमाया फिर अपनी ऊँटनी बिठायी।

(مقتل ابی مخنف، ص55)

शियों की एक बड़ी किताब "बिहारुल अनवार" में भी ये मौजूद है।

(بحار الانوار، ج44، ص383)

बिहारुल अनवार में ये भी है कि मुहम्मद बिन हनफिया ने इमाम हुसैन को रोकने के लिये ऊँटनी की नकील पकड़ ली।

(ایضاً، ص364)

इन के इलावा और भी कुछ कुतुब में ऊँटनियों का ही ज़िक्र है।

(تاریخ روضۃ الصفاء، ج3، ص579۔

تفسیر لوامع التنزیل، ج13، ص91)

अल कामिल में है कि इमाम हुसैन अपनी ऊँटनी पर सवार हुये और बुलंद आवाज़ से आवाज़ दी जिसे सब लोगों ने सुना।

(الکامل فی التاریخ، ج4، ص61)

एक शिया लिखता है कि मैने ये ज़ुलजनाह का नाम हदीस, अखबार और तारीख की किसी मुअतबर किताब में नहीं देखा।

(ناسخ التواریخ، ج6، ص344)

इन तमाम हवाला जात से साबित होता है कि इमाम हुसैन के पास घोड़े नहीं थे। लेकिन कुछ लोग ना जाने कहाँ से घोड़े ले आते हैं।

वैसे जो लोग इमाम ज़ैनुल आबिदीन की मुलाक़ात हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुबारक से करवा सकते हैं, मैदान - ए- करबला में शादी करवा सकते हैं, उन के लिये ऊँटों को भगा कर घोड़े लाना कोई बड़ी बात नहीं है।

(12) हज़रते सकीना और घोड़ा

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया है :

(क) गैर मुनासिब अल्फाज़ का इस्तेमाल

(ख) वाक़िया

(ग) ये वाक़िया मनघड़त है

(क) गैर मुनासिब अल्फाज़ का इस्तेमाल :

हज़रते सकीना और घोड़े का वाक़िया चंद क़िताबों में इस तरीक़े से बयान किया गया है की जिस पर गौर करने के बाद एक कम पढ़ा लिखा शख्स भी ये कहेगा की अहले बैत के लिये ऐसे अल्फाज का इस्तेमाल हरगिज़ मुनासिब नहीं और ये तरीक़ा सिर्फ़ लोगों को रुलाने के लिये इख्तियार किया गया है।

आप खुद देखें की किस तरह इस वाक़िये को दर्दनाक बनाने के लिये लफ्फाज़ी का सहारा लिया गया है।

(ख) वाक़िया :

हज़रते ज़ैनब के सर से चादर उतरी हुई है, बाल बिखरे हुये हैं, नज़र पथरायी हुई है, आँसुओं के दो मोटे मोटे क़तरे पलकों पर आ कर ठहरे हुये हैं, हज़रते सकीना बेहोश पड़ी हैं और अपने सरताज को देख कर रोती जा रही हैं।

इमाम हुसैन अपने बेटे ज़ैनुल आबिदीन से गुफ्तगू में मसरूफ थे और अपने पीछे बरपा होने वाली क़ियामत को ना देख सके, अब जो देखा तो दिल पर हाथ रख लिया।

इमाम हुसैन आगे बढ़े और बहन की गिरी हुई चादर को उठाया और सर ढाँप दिया, हज़रते सकीना को गोद में लिया, अली अकबर के खून से लिथड़े हुये सकीना के चेहरे को अपने इमामे से साफ किया, बिखरे हुये बालों को उंगलियों से दुरुस्त किया फिर फरमाया :

सकीना होश में आओ, बाबा की आखिरी ज़ियारत कर लो फिर सारी उम्र बाबा का चेहरा देखने को तरस जाओगी, बेटी सकीना उठो जल्दी करो, आखिरी मुलाक़ात कर लो, आखिरी बार बाबा के सीने से लिपट लो फिर तो सारी ज़िंदगी तम्हें भी सुगरा की तरह रो रो कर और तड़प तड़प कर गुज़ारनी है। तीन दिन की प्यासी बच्ची तीन दिन के प्यासे बाबा से गले मिल रही है। इमाम हुसैन ने कहा कि ए बच्ची! तुम थोड़ी देर बाद यतीम हो जाओगी! सकीना कहने लगी बाबा आप ना जायें, मेरे अब्बा जान ना जायें, आप चले गये तो बाबा किस को कहूँगी! फिर जब इमाम हुसैन घोड़े पर सवार हुये और घोड़े को चलाना चाहा तो वो हिल ही नहीं रहा है, आप ने नीचे देखा तो सकीना घोड़े के पाऊँ से लिपटी हुई है।

आप ने फरमाया कि बेटी बाप के दिल पर छुरियाँ ना चलाओ, फिर आप ने घोड़े से उतर कर बड़ी मुश्किल से बच्ची को खेमे में पहुँचाया और मैदान -ए- जंग की तरफ रवाना हुये।

(ग) ये मनघड़त है :

ये क़िस्सा शहीद इब्ने शहीद वगैरा में मौजूद है और बयान करने वाले जैसे चाहते हैं नमक मिर्च लगा कर बयान करते हैं।

ये एक मनघढ़त क़िस्सा है जिसे सिर्फ रोने रुलाने के लिये घढ़ा गया है।

इस में हज़रते ज़ैनब के मुतल्लिक़ जो मज़कूर है कि "सर से चादर उतरी हुई है और उन के बाल बिखरे हुये हैं" क्या हुज़ूर ﷺ के घराने की एक शहज़ादी के बारे में ऐसा सोचा भी जा सकता है।

हज़रते सकीना जो कि शादी शुदा थीं, उन के बारे में कहना कि इमाम हुसैन ने गोद में लिया और वो घोड़े के पाऊँ से लिपट गयीं, ये किस तरह क़बूल किया जा सकता है?

ऐसा हो ही नहीं सकता कि अहले बैत ने इस तरह से बे-सब्री का मुज़ाहिरा किया हो, ये सब बातें बिल्कुल झूट हैं और किसी मुअतबर किताब में मौजूद नहीं है।

कुछ लोग बजाये अपनी इस्लाह करने के, जो ऐसे मनघढ़त और गुस्ताखी भरे वाक़ियात की हक़ीक़त बयान करता है, उसी पर गुड़ खा कर चढ़ जाते हैं, उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।

कुछ मुक़र्रिरीन ने तो हद कर दी है, कहते हैं कि हमें दलील की ज़रूरत नहीं बल्कि अबू जहल को है!

अपनी तक़रीर में चार चाँद लगाने और अपनी बाज़ार को चमकाने के लिये ऐसे क़िस्सों को खूब रो रो कर बयान किया जाता है और लोगों की अक़ीदत और मुहब्बत के साथ खिलवाड़ किया जाता है।

अल्लाह त'आला हमें अहले बैत की तरफ ऐसे झूटे क़िस्सों को मन्सूब करने से बचाये और उन की शानों के लाइक़ उन की ताज़ीमो तकरीम करने और उन से मुहब्बत करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

(13) माहे मुहर्रम में रोना धोना

ये मुख्तसर सी तहरीर उन मुक़र्रिरीन व अवाम दोनो के लिये है जो झूटे वाक़ियात को बार बार बयान कर के लोगों को रोने पर मजबूर करते हैं और गमे हुसैन मैं जबरदस्ती रोने को सवाब समझते हैं।

मुझे रोना नही आता तो क्या कोई ज़बरदस्ती है?

जी जी बिल्कुल आप को रोना ही पड़ेगा, अगर नही रोये तो इस का मतलब आप को अहले बैत से मुहब्बत नहीं है।

आप नहीं रो सकते तो हमारे पास आयें हम आप को ऐसे क़िस्से सुनायेंगे जिन्हें सुनने के बाद आप अपने आँसू को रोक नहीं पायेंगे और नहीं तो कुछ भी करें लेकिन रोयें।

माहे मुहर्रम को कुछ लोगों ने माहे मातम समझ लिया है। रोना ज़रूरी है, शादी नहीं कर सकते, मुबारकबाद नहीं देनी है, गोश्त नहीं खाना है और फुलाँ नहीं छूना है....., ये सब क्या ड्रामा है?

ये ज़बरदस्ती रोने धोने का ड्रामा करने वालो को जान लेना चाहिए के किसी प्यारे की वफात पर क़तई तौर पर रोना आ जाना मुहब्बत है और रहम के जज़बे का नतीजा है और ये बिल्कुल दुरुस्त और जाइज़ है लेकिन हर साल रोने रुलाने के लिए बैठ जाना एक अजीब हरकत है।

इस दुनिया में हर किसी की बहन भाई, माँ बाप, अवलाद और रिश्तेदार फौत होते रहते हैं, मुर्शिद वा उस्ताद फौत होते रहते हैं, इन सब के लिये इसाल -ए- सवाब का सिलसिला ज़िन्दगी भर जारी रहता है मगर साल के साल रोने का धंधा नहीं किया जाता।

हज़रते अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु रमज़ान में शहीद किये गये, हज़रते उसमान गनी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु को कई दिनों तक उन के घर में महसूर कर के और उन का पानी बन्द करके प्यास की हालत में शहीद कर दिया गया, हज़रते उमर फारूक़ रदिअल्लाहु त'आला अन्हु को मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ते हुये छुरा मार कर शहीद कर दिया गया....., ज़ुल्म की ये दास्तानें एक से बढ़ कर एक है। इन में से किसी एक से मौक़े पर हम साल के साल ना मातम करते हैं और ना रोते हैं।

चलें सब को छोड़ दें, अहादीस में आता है कि दुनिया का सब से तारीक दिन वो था जिस दिन रहमत -ए- आलम ﷺ इस दुनिया से रुख्सत हुये, अगर हर साल गम मनाना और रोना रुलाना जाइज़ होता तो अल्लाह की अज़मत की क़सम रबीउल अव्वल के महीने में हर साल पूरी दुनिया में कोहराम बरपा हो जाया करता।

अब हम हर साल मीलाद -ए- मुस्तफा की खुशी तो ज़रूर मनाते हैं मगर विसाल की वजह से ना मातम करते हैं और ना तो सिर्फ रोते हैं।

जो लोग अहले सुन्नत पर ये इल्ज़ाम लगाते हैं कि ये इमाम हुसैन से मुहब्बत नहीं करते, उन्हें गौर करना चाहिये कि अहले सुन्नत की हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ के साथ मुहब्बत को तो कोई माँ का लाल चेलेन्ज नहीं कर सकता, आखिर हुज़ूर के विसाल के मौक़े पर हम क्यों नहीं रोते?

यहाँ से बात निखर कर सामने आ जाती है कि हर साल रोने धोने बैठ जाना एक गौर शरई हरकत है और जो लोग सुन्नी कहलाने के बावजूद हर साल ये धंधा करते हैं उन्हें रवाफिज़ का टीका लग चुका है।

अल्लाह के प्यारों का तरीक़ा तो ये है कि प्यारों की एन वफात के दिन भी सब्रो तहम्मुल से काम लेते हैं और आँसुओं पर भी कंट्रोल रखने की पूरी कोशिश करते हैं, हाँ अलबत्ता बे इख्तियार आँसू निकल आना एक अलग बात है।

अगर किसी को इत्तिफाक़िया रोना आ जाये तो ऐसे रोने में कोई क़बाहत नहीं लेकिन तकल्लुफ के साथ जान बूझ कर रोने धोने बैठ जाना और इसे गमे हुसैन में रोना समझ कर सवाब की उम्मीद रखना बिल्कुल गलत है।

(انظر: سانحۂ کربلا، علامہ غلام رسول قاسمی نقشبندی)

(14) अहले बैत की फ़ज़ीलत में एक झूठी रिवायत

वाक़िया-ए-क़रबला बयान करते हुये इस रिवायत को भी ज़िम्नन बयान किया जाता है और शहीद इब्ने शहीद और दुसरी कुछ क़िताबों मैं भी ये रिवायत नक़्ल की गई है लिहाज़ा ज़रूरत महसूस हुयी के इस की तहक़ीक़ भी यहाँ बयान की जाये।

ये रिवायत कुछ इस तरह मिलती है :

सुनो! जो आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो शहीद है, सुनो! जो आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो बख़्शा हुआ है, सुनो! आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो ताइब है, सुनो! जो आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो कामिलुल ईमान है, सुनो! जो आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा उस को मलकुल मौत ने जन्नत की बशारत दी, सुनो! जो आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मर उस को जन्नत में इस तरह बना सँवार कर ले जाया जायेगा जैसे दुल्हन को खाविन्द के घर ले जाया जाता है, सुनो! जो आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा उस की क़ब्र में जन्नत की दो खिड़कियाँ खोल दी जाती हैं, सुनो! जो आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा तो अल्लाह त'आला उस की क़ब्र को रहमत के फिरिश्तों के लिये मज़ार बना देता है, सुनो! जो आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो अहले सुन्नत व जमा'अत पर मरा, सुनो! जो आले मुहम्मद से बुग़्ज़ पर मरा वो क़ियामत के दिन आयेगा तो उस की पेशानी पर लिखा होगा कि ये अल्लाह की रहमत से मायूस है, सुनो! जो आले मुहम्मद से बुग़्ज़ पर मरा वो कुफ़्र पर मरा, सुनो! जो आले मुहम्मद से बुग़्ज़ पर मरा वो जन्नत की खुशबू भी नहीं सूँघेगा।

ये रिवायत कुछ किताबों में मौजूद है, इस रिवायत के बारे में हज़रते अल्लामा गुलाम रसूल सईदी रहीमहुल्लाह लिखते हैं :

ये रिवायत हदीस की किसी मारूफ और मुस्तनद किताब में मज़कूर नहीं है, इस रिवायत को अल्लामा अबू इस्हाक़ सालबी ने अपनी तफसीर में एक सनद के साथ रिवायत किया है।

उस सनद के बारे में हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि ये मौज़ू है और इस रिवायत के मनघढ़त होने के आसार बिल्कुल वाज़ेह हैं।

(الکاف الشاف فی تخریج احادیث الکشاف، ج4، ص220)

इस रिवायत को दूसरे मुफस्सिरीन सनद की तहक़ीक़ के बगैर नक़ल दर नक़ल करते चले गये (फिर कई मुताख़िरिन ने बगैर तहक़ीक इसे नक़ल कर दिया)

जब फज़ाइल -ए- अहले बैत में अहादीस -ए- सहीहा मौजूद हैं तो फिर मौज़ू रिवायात का सहारा लेने की क्या ज़रूरत है, हत्ता कि किसी तान करने वालों को ये कहने का मौक़ा मिले कि फज़ाइल -ए- अहले बैत तो सिर्फ मौज़ू और बातिल रिवायात से साबित हैं।

(تبیان القرآن، ج10، ص585)

(15) मुल्ला हुसैन वाईज़ काश्फ़ी सुन्नी नही

इस उन्वान के तहत इन बातों को ज़ेरे बहस लाया गया है :

(क) कई वाक़ियात का सिलसिला रौज़तूश शुहदा से मिलता है

(ख) रौज़तूश शुहदा शियों की नज़र मैं

(ग) मुल्ला हुसैन काश्फ़ी और वाक़िया-ए-क़रबला

(घ) अल हासिल

(क) कई वाक़ियात का सिलसिला रौज़तूश शुहदा से मिलता है :

चूंकि कई वाक़ियात ऐसे हैं जिन का सिलसिला मुल्ला हुसैन काश्फ़ी की क़िताब रौज़तूश शुहदा पर जा कर रुक जाता है लिहाज़ा मुनासिब मालुम होता है की मुसन्नीफ के अहले सुन्नत से ताल्लुक़ होने ना होने के बारे मे भी लिखा जाये।

ये तो साबित हो चुका है की ये क़िताब मुअतबर नहीं लेकीन अब हम जो बयान करेंगे इस से आपको अंदाजा हो जायेगा की मुसन्नीफ भी मुअतबर नहीं है।

(ख) रौज़तूश शुहदा शियो की नज़र मैं :

अल्लामा मुहम्मद अली नक़्शबंदी रहिमहुल्लाहू त'आला लिखते हैं की शियो की क़िताब "अज़्ज़रीया" का मक़्सदे तालिफ़ यही था की तमाम शिया मुसन्नीफीन की क़िताबों को एक जगह जमा कर दिया जाये। और इस मे किसी ऐसी क़िताब का तज़क़ीरा ना मिलेगा जो अहले तशय्यू के नजरियात और मोताक़िदात पर मुशतमील ना हो और इस मे मुल्ला हुसैन वायीज़ काश्फ़ी की रौज़तूश शुहदा को भी शामिल किया गया है।

(الذریعہ الی تصانیف الشیعہ، ج11، ص294، 295)

इस क़िताब मे रौज़तूश शुहदा का नाम मौजूद होना साफ़ ज़ाहिर करता है की ये क़िताब अहले तशय्यू की है। इस के अलावा एक और क़िताब का हवाला मुलाहिज़ा फरमाये :

शिया मुसन्नीफ, शैख अब्बास क़म्मी लिखता है की मुल्ला हुसैन काश्फ़ी बहुत बड़ा आलिम फाजिल था। मौलाना अब्दुल रहमान जामी का बहनोई है। दीनी उलूम का जामे, मुहद्दीस, मुफस्सिर और बा खबर आलिम था। इस की बहुत से तसानीफ हैं। रौज़तूश शुहदा भी इस की तसनीफ़ है। हज़रते अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हो की शान मे इस ने एक क़सिदा कहा है। जिस के दो शेर ये है :

ذریتی سوال خلیل خدا بخواں

واز لانیال عهد جوابش بکن دا

گر دتو راعیاں که امامت نه لائق است

آزراکه بوده بیشتر عمر در خطا

"यानी हज़रत इब्राहिमी अलैहिस्सलाम ने अल्लाह त'आला से अपनी औलाद मे इमामत का सवाल किया तो जवाब मिला की ये मनसब जालिमों को नहीं मिल सकता। इस से तुम्हे मालूम हो जायेगा की मनसब-ए-इमामत इन लोगों को नहीं मिल सकता जीन की उम्र का अक्सर हिस्सा इस्लाम मे ना गुज़ारा हो"

ये अश'आर मुल्ला हुसैन काश्फ़ी के शिया होने की दलील है।

शिया अब्बास क़म्मी ने इसके शिया होने की तसरीह की है और वो भी ऐसे नजरिये पर जो उन का मुत्तफीक़ा अक़ीदा है यानी इमामत के लिया मासूम होना।

इसके साथ क़ुरानी आयात से हज़रते इब्राहिमी अलैहिस्सलाम के वाक़िये की ज़िमन में उसने ये भी साबित किया की ज़ालिम और खताकार और कुफ्र की जींदगी गुज़र कर मुसलमान होने वाले मनसबे इमामत के हरगिज़ लायेक नहीं हो सकता जिस का मतलब ये है की खुलफ़ा-ए-सलासा की खिलाफत बर हक़ ना थी क्यूँकी अहले तशय्यू के नज़दीक इन का क़ब्ल अज़ इस्लाम ज़माना बुत परस्ती में गुज़रा।

अगर्चे उन का ये कहना गलत है लेकीन उनके नज़्दीक़ जब इन तीन खुलफ़ा का ज़माना क़ब्ल अज़ इस्लाम शिर्को बुत परस्ती में का दौर था तो ईमान लाने का बाद ये मासूम हरगिज़ ना हुये और इमाम नब्ज़े क़ुरानी मासूम होता

है लिहाज़ा ये तीनो हज़रात मनसबे खिलाफत पर जबरदस्ती मुतमक्कीन रहे और इन्होने हज़रते अली रदिअल्लाहो त'आला अन्हो का हक़्क़े खिलाफत व इमामत गसब कर रखा था।

इस अक़ीदे की बुनियाद पर जो साहिबे रौज़तूश शुहदा के अश'आर से ज़ाहिर है अहले तशय्यू के एक जुगादरी ने इसकी शिय्यात पर मुहर-ए-तस्दीक़ सब्त कर दी।

(ग) मुल्ला हुसैन काश्फ़ी और वाक़िया-ए-क़रबला :

अल्लामा मुहम्मद अली नक़्शबंदी लिखते हैं की रौज़तूश शुहदा का मुसन्नीफ मुल्ला हुसैन वायीज़ काश्फ़ी वो शख्स है जो वाक़िया-ए-क़रबला के मुताल्लिक़ मनघड़त वाक़ियात और रिवायात लिखने वाला पहला मुसन्नीफ है।

बाद मैं शिया सुन्नी क़ुतुब में रोने रुलाने वाले वाक़ियात और वाक़िया-ए-क़रबला को रंगीन बनाने के लिये जो रिवायात मौजूद हैं उन सब ने इसे काश्फ़ी से नक़्ल किया है।

इस के शिया होने का सबूत शियो की मुस्तनद क़िताबों में मौजूद है (जिसे हम नक़्ल कर चुके हैं)

(میزان الکتب، ص214تا254)

(घ) अल हासिल :

क़िताब का गैर मुअतबर होना तो यक़ीनी है साथ ही साथ मुसन्नीफ का हाल भी क़राइन (Readers) पर वाज़ेह हो चुका होगा।

अब भी अगर कोई इस क़िताब को या मुसन्नीफ को सनद के तौर पर पेश करता है तो ये बड़ी अजीब बात होगी।

ये दुरुस्त है की अदमे तवज्जोह की वजह से कयी उलमा जिन का ताल्लुक़ अहले सुन्नत से है, उन्होने एक दो बातें इस क़िताब की मशहूर होने की बिना पर अपनी क़िताबों में नक़्ल कर दी हैं लेकीन इससे हक़ीक़त पर कोई फर्क़ नहीं पड़ता। हमने इस क़िताब से कुछ वाक़ियात को ही नक़्ल किया है वरना पूरी क़िताब ऐसे अजीबो गरीब क़िस्सो से भरी पड़ी है जिन की कोई असल नहीं।

(16) शहीद इब्ने शहीद, खाके करबला, अवराक़े गम वग़ैरह कुतुब।

उर्दू ज़ुबान में वाक़िया -ए- कर्बला पर सैंकड़ों की तादाद में कुतुब व रसाइल मौजूद हैं। मुक़र्रिरीन के नज़दीक शहीद इब्ने शहीद और खाके करबला नामी किताब को बहुत अच्छी किताब समझा जाता है। ये किताबें आवाम में भी खास सोहरत रखती हैं। इस की वजह इन के अंदर मौजूद मसाले दार क़िस्से और मुक़र्रिरीन के लाइक़ मवाद हैं जिस से

किसी महफ़िल में रंग जमाया जा सकता है। झूटे वाक़ियात को इस अंदाज़ में लिखा गया है कि जिसे सुन कर किसी को भी रोना आ जाये। लफ्फाज़ी तो इन में भरमार है।

तारीख की किसी किताब में वाक़िया -ए- करबला इतनी तफ़सील से मौजूद नहीं जितना इन किताबों में है। एक-एक शख्स की शहादत की तफ़सील को इस तरह बयान किया गया है जैसे मुसन्निफ़ खुद मैदाने करबला में मौजूद हो। तरतीब के साथ बयान किया गया है कि किस ने किस तरह हमला किया, किस ने किस कितने लोगों को मारा, किस ने क्या अशआर पढ़े और किस का क्या अंजाम हुआ हालाँकि कुतुबे तवारीख इस बारे में खामोश हैं। फिर सुगरा का क़िस्सा, सुगरा का क़ासिद, सुगरा का खत, सकीना की बेचैनी, हज़रत ज़ैनब का बच्चों को मैदाने जंग में भेजना जिन के क़द से बड़ी तलवार बतायी जाती है, फिर पानी बंद होने के बारे में अजीबो गरीब बातें और ना जाने कितनी खुराफात को इन किताबों में बड़े धड़ल्ले के साथ नक़्ल किया गया है।

अगर इन किताबों पर शुरू से आखिर तक बहस की जाये तो एक अलग किताब बन जायेगी। ऐसी किताबों को तक़रीरों में बयान करना हरगिज़ दुरुस्त नहीं हैं। हमने बस कुछ मशहूर वाक़ियात पर ही इफ्तिफ़ा किया है वरना ऐसे कई वाक़ियात मौजूद हैं जिन की कोई हक़ीक़त नहीं है। मुक़र्रिरीन से गुज़ारिश हौ कि ऐसी किताबें ना पढ़ें और झूट को फरोग ना दें और वो भी झूट ऐसा जो अहले बैत पर बांधा गया हो।

आखिर में कुछ बातें

अल्लाह की तौफ़ीक़ से हमने कुछ वाक़ियात की तहक़ीक़ को पेश किया है ताकि लोगों को हक़ीक़त मालूम हो जाये और फिर अहले बैत की तरफ ऐसे झूटे वाक़ियात को मन्सूब ना किया जाये।

वाक़िया -ए- करबला पर लिखी जाने वाली हर किताब को मुअतबर समझकर पढ़ने से परहेज़ करना चाहिये और चंद कुतुब हैं मस्लन सवानेह करबला अज़ अ़ल्लामा नईमुद्दीन मुरादाबादी, आइना -ए- क़ियामत अज़ अ़ल्लामा हसन रज़ा खान और सवानेह करबला अज़ अ़ल्लामा गुलाम रसूल क़ासमी, इन को पढ़ा जाये और इन में दो वाक़ियात जो रौज़तश्शुहदा से आ गये हैं उनको अलग कर दिया जाये जैसे इमाम मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों का वाक़िया वग़ैरह।

झूटे वाक़ियात बयान करना अहले बैत की मुहब्बत नहीं बल्कि उनकी तरफ मन्सूब ऐसे वाक़ियात का रद करना ही मुहब्बत का तक़ाज़ा है।

अगर कोई दिये गये इल्मी दलाइल को एक तरफ़ कर के ये कहें कि हम मुहिब्बे अहले बैत हैं और हमें इन सब से कोई गर्ज नहीं, ना हमें दलील की हाजत तो ये मुहब्बत नहीं जहालत है।

अब ये कि मुसन्निफ़ीन ने नक़्ल क्यों किया तो सैकड़ों मिसालें पेश की जा सकती हैं कि मुसन्निफ़ीन कई बातें अदम तवज्जो की बिना पर या बगैर खुद की तहक़ीक़ महज़ एतिमाद की बुनियाद पर या शोहरत की वजह से नक़्ल कर देते हैं और फिर बाज़ अवक़ात वो सदियों इसी तरह नक़्ल पे नक़्ल होती जाती हैं और ये आखिर में जब कोई इस पर तहक़ीक़ी नज़र डालता है तो मालूम होता है कि इसकी कोई अस्ल ही नहीं थी।

अगर किसी को हमारी बातों से इख्तिलाफ़ हो तो इल्मी दलाइल के साथ ज़रूर कर सकते हैं कि ये उनका हक़ है लेकिन महज़ जज़्बात में आ कर कीचड़ उछालने वालों से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

ऐसी तहक़ीक़ी बातों में जब जज़्बात दरमियान में आ जाते हैं तो हक़ीक़त दिखाई ही नहीं देती है।

अल्लाह त'आला हमारी कोशिशों को क़ुबूल फरमाये और खताओं को माफ़ फ़रमाये।

ज़िम्मन : मुरव्वजा ताज़ियादारी के नाजायेज़ होने पर क़ुतुब-ए-अहले सुन्नत के 100 से ज़ायीद हवाले।

माहे मुहर्रमुल हराम में जिस तरह ताज़ियादारी रायिज़ है, सरासर नाजायिज़ो हराम है और हमने अल्हम्दुलिल्लाह क़ुतुब-ए-अहले सुन्नत के 100 से ज़ाइद हवाले जमा किये है जहाँ इसकी मुमानत पर सराहत मौजूद है

हवाले मुलाहिज़ा फरमाइये :

(1) فتاوی عزیزی، ص184 (2) ایضاً، ص186 (3) ایضاً، ص188 (4) ایضاً، ص189 (5) فتاوی رضویہ، ج29، ص238 (6) ایضاً، ج24، ص142 (7) ایضاً، ص145 (8) ایضاً، ص490 (9) ایضاً، ص493 (10) ایضاً، ص498 (11) ایضاً، ص499 (12) ایضاً، ص500 (13) ایضاً، ص501 (14) ایضاً، ص502 (15) ایضاً، ص503 (16) ایضاً، ص504 (17) ایضاً، ص505 (18) ایضاً، ص507 (19) ایضاً، ص508 (20) ایضاً، ص513 (21) ایضاً، ص525 (22) ایضاً، ص558 (23) ایضاً، ج21، ص168 (24) ایضاً، ص221 (25) ایضاً، ص246 (26) ایضاً، ص247 (27) ایضاً، ص423 (28) ایضاً، ج16، ص121 (29) ایضاً، ص155 (30) ایضاً، ج15، ص263 (31) ایضاً، ج8، ص455 (32) ایضاً، ج6، ص442 (33) ایضاً، ص608 (34) فتاوی

شرعیہ، ج2، ص612(35) ایضاً، ج2، ص442(36) فتاوی بحر العلوم، ج1، ص188(37) ایضاً، ص320(38) ایضاً، ج4، ص293(39) ایضاً، ج5، ص238(40) ایضاً، ص247(41) ایضاً، ص268(42) ایضاً، ص301(43) ایضاً، ص442(44) ایضاً، ص443(45) ایضاً، ص452(46) ایضاً، ص453(47) ایضاً، ص456(48) ایضاً، ج6، ص173(49) فتاوی دیداریہ، ص120(50) ایضاً، ص132(51) فتاوی مفتی اعظم راجستھان، ص135(52) فتاوی خلیلیہ، ج1، ص79(53) فتاوی اجملیہ، ج4، ص15(54) ایضاً، ص42(55) ایضاً، ص68(56) ایضاً، ص83(57) ایضاً، ص105(58) ایضاً، ص128(59) ایضاً، ص88(60) فتاوی شارح بخاری، ج2، ص454(61) فتاوی ضیاء العلوم، ص39(62) فتاوی ملک العلماء، ص463(63) فتاوی اجملیہ، ج4، ص15(64) فتاوی فقیہ ملت، ج1، ص54(65) ایضاً، ج2، ص155(66) کیا آپ کو معلوم ہے، ج1، ص215 (67) فتاوی مسعودی، ص83(68) فتاوی نعیمیہ، ص55(69) فتاوی اویسیہ، ص464(70) فتاوی تاج الشریعہ، ج1، ص293 (71) ایضاً، ص427(72) ایضاً، ج2، ص103(73) ایضاً، ص341(74) ایضاً، ص511(75) ایضاً، ص561(76) ایضاً، ص597(77) ایضاً، ص619(78) تعزیہ بازی(79) ملفوظات اعلی حضرت، ص286(80) اعلی حضرت کے بعض نئے فتاوی، ص86(81) فتاوی منظر اسلام نمبر، ص218(82) ایضاً، ص219(83) ایضاً، ص235(84) ایضاً، ص237(85) ایضاً، ص239 (86) ایضاً، ص246(87) فتاوی رضا دار الیتامی، ص285(88) عرفان شریعت، ص10(89) فتاوی شرعیہ، ج3، ص272(90) ایضاً، ص531(91) فتاوی امجدیہ، ج4، ص167(92) ایضاً، ص185(93) ایضاً، ص206(94) تعزیہ اور ماتم(95) تعزیہ علماے اہل سنت کی نظر میں(96) رسومات محرم اور تعزیہ داری(97) مروجہ تعزیہ داری کا شرعی حکم(98) بہار شریعت، ح16(99) خطبات محرم، ص464(100) محرم میں کیا جائز کیا ناجائز(101) محرم الحرام کے بارے میں 50 سوالات اور علماے اہل سنت کے جوابات(102) ماہ محرم اور بدعات(103) قانون شریعت(104) فتاوی فیض الرسول، ج1، ص247(105) ایضاً، ص249 (106) ایضاً، ص250(107) فتاوی فیض الرسول، ج2، ص518(108) ایضاً، ص533(109) ص563(110) ایضاً، ص646

FIND ABDE MUSTAFA OFFICIAL ON SOCIAL MEDIA NETWORK

Visit : abdemustafa.in
Find us on Facebook /abdemustafaofficial
Instagram /abdemustafaofficial
Twitter /abdemustafaofficial
Telegram /abdemustafaofficial
Telegram Library /abdemustafalibrary
E Nikah Matrimony on Telegram /Enikah
E Nikah Matrimony site : enikah.in (under construction)
WhatsApp : +919102520764
+917301434813
Separate Groups for females are available.
YouTube /abdemustafaofficial

عبد مصطفى
AM ABDE MUSTAFA

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

Our Other Pamphlets

Azaan -e- Bilal Aur Suraj Ka Nikalna
Allah Ta'ala Ko Uparwala Ya Allah Miyan Kehna Kaisa?
Gaana Bajana Band Karo, Tum Musalman Ho!
Shabe Meraj Huzoor Ghause Paak
Ishqe Majazi
Shabe Meraj Nalain Arsh Par
Ghaire Sahaba Mein Radiallaho Ta'ala Anho Ka Istemal
Bahaar -e- Tehreer (Kayi Hisso Mein)
Muqarrir Kaisa Ho?
Ikhtelaf Ikhtelaf Ikhtelaf
Hazrate Owais Qarni Ka Ek Waqiya
Hazrate Ali Ki Wiladat Kahan Huyi?
Available in Urdu, Roman Urdu and Hindi

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

AM ABDE MUSTAFA